Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुक्ति के पथपर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुक्ति के पथपर

: उपोद्घात :

सिद्धांत महोदधि सुविशाल गच्छाधिपति

प० पू० आ० श्री विजय प्रेमसूरीश्वरजी

के शिष्य

पू० मुनिश्री कुलचंद्रविजयजी

: संपादक :

प्रमतलाल मोदी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

: मुद्रक, प्रकाशक :
प्रोग्रेसिव प्रिन्टर्स, अहमदाबाद-२२.

: मिलने का पता :
श्री जैन श्रेयस्कर मंडल, मेहसाना.

मूल्य सिर्फ लागत १-०० रुपया मात्र

वि॰ संवत २०३० प्रति १०००

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समर्पण

अपने जन्मदाता अत्यंत उपकारी जनक जननी को-

जिन्होंने जन्म देकर तथा पालपोस कर बडा किया;

जिनसे धर्म के मूलत: कुछ सुसंस्कार प्राप्त हुए;

जिनके ऋणसे स्वप्न में भी कभी उऋण होने की आशा नहीं।

—अमृतलाल मोदी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१. नमस्कार महामंत्र	१
२. प्रार्थना	२
३. पंचसूत्र (प्रथम सूत्र) अर्थ सहित	५
४. पंचसूत्र प्रथम सूत्रका विवेचन	१८
५. पंचसूत्र द्वितीय सूत्र-अर्थ-विवेचन सहित	४५
६. समाधि विचार	७१
७. नवपदों के दोहे	१०३
८. मुख्य आंतरिक भाव	१०५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अर्ह नमः ॥

इस पुस्तिका में अर्थ और संक्षिप्त विवेचन सहित प्रार्थनासूत्र (जयवीयरायसूत्र), पंच-सूत्र के प्रथम दो सूत्र, समाधि-विचारादि का सुन्दर संग्रह है।

प्रार्थना-सूत्र द्वारा की गई भवनिर्वेद से लगाकर पर-हित-करण तक की प्रथम छ याचनाओं से लौकिक सुन्दरता के साथ ही साथ सद्गुरु-योग और उनके वचन का सेवन स्वरूप दो याचनाओं से लोकोत्तर सौन्दर्य भी अपेक्षित है।

पापप्रतिघात और गुणबीजाधान नामक पंचसूत्र के प्रथम सूत्र का पठन श्रवण चिंतन आत्मा में देश विरति धर्म की योग्यता प्राप्त कराने द्वारा कल्याण का महान् कारण है।

साधु-धर्म परिभावना नामक दूसरे सूत्र के पठनादि से सर्वविरति धर्म की योग्यता प्राप्त होती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस तरह भवनिर्वेद, मार्गानुसारिता, सम्यग्दर्शन, देशविरति सर्व विरति रूप क्रमिक उत्थान के पश्चात् भी कषाय परिणति के उपशम रूप समाधि की पूरी आवश्यकता रहती है, अतः 'समाधि विचार' का संकलन भी उचित ही है। इस सुन्दर और मृदु-भाषी काव्य में समाधि की मूलभूत अनित्यादि भावनाओं का भावपूर्ण निरूपण है तथा आराधक आत्मा की परिणति का सुन्दर दर्शन होता है।

अतः यह लघु पुस्तिका नित्य स्वाध्याय में श्री चतुर्विध संघ को अत्युपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तिका के संग्रहकर्ता श्री अमृतलालजी मोदी M. A. का यह प्रयास अनुमोदनीय है।

श्री दानसूरीश्वर ज्ञान मंदिर
कालुपुर रोड, अहमदाबाद. मुनि कुलचन्द्र विजय
१८-१-७४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक प्रकाशन संबंधी

मेरे छोटे भाई का देहान्त सन १९४५ में होने पर उसकी धर्म क्रिया में रुचि देखकर मुझे प्रेरणा मिली। उसके स्मारक रूप में एक योजना बनाकर विधि सहित देवसी राई प्रतिक्रमण पुस्तक प्रथम पुष्प के रूप में प्रकाशित की गई। कुछ वर्ष बाद उन पुस्तकों की बिक्री से जो रकम आई वह मेरे पास पड़ी रही। उसमें से 'बारह व्रत का संक्षिप्त परिचय' पुष्प-२ के रूपमें भेंट देनेके लिए छपवाया गया और पुष्प-३ के रूपमें 'नव्वाणु पछी शु' छापा गया। पुस्तक के पैसों में ब्याज जोडकर आज तक जो रकम मेरे पास हुई है, वह सब इसमें लगा दी गई है।

अपने मातापिता से मिले संस्कारों और छोटे भाई के जीवन से मिली प्रेरणा के उपरांत जीवन में धर्म का प्रभाव श्री जैन श्रेयस्कर मंडल की नव-तत्त्व नामक पुस्तक पढने से पडा। पापभीरुता के रूप में धर्म के जीवन में इस प्रवेशने धीमी पर स्थिर गति से प्रगति की। दोनों प्रकरणों को अधिक हृदयंगम करने से धर्मतत्त्व बौद्धिक स्तर पर तथा आचरण में अच्छी तरह जमने लगा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संस्था की समाधि विचार पुस्तिका का भी जो इस में जोड दी गई हैं मुझ पर खूब उपकार है ।

इसी ऋण को उतारने के कुछ प्रयत्न स्वरूप शांति स्मारक योजनाका पैसा लगाकर प्रकाशित की गई यह पुस्तक संपूर्ण रूपसे संस्थाको सौंपता हूं । यह उन्हीं की मालिकी की है। अतः इसमे से जो भी आय हो, उसे किसी भी तरह उपयोग में लेने म संस्था स्वतंत्र है, हमारी कोई शर्त नहीं ।

मूल तो दीक्षा के अवसर पर प्रकाशित होने के लिए यह पुस्तक तयार की गई थी, पर कई कारणों से दीक्षा में अंतराय आते गये और वह सौभाग्यशाली क्षण अभी तक जीवन में न आ सका ।अतः इस प्रकाशन को अधिक रोकना अच्छा न समझने से यह पुस्तक अब प्रस्तुत है ।

इस बात का अत्यंत हर्ष है कि प.पू. आचार्य देव श्री कैलाशसागरसूरिजी के प्रशिष्य विद्वान वक्ता पू. पद्मसागरजी म० सा० के पदवीदान समारोह के अवसर पर (वसंत पंचमी) इसे प्रकाशित करनेका हमें सुन्दर मौका मिला है । इसके लिए हम अहमदाबाद के जैन नगर के संघ के आभारी है । विनीत

अहमदाबाद. —अमृतलाल मोदी
१६-१-७४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

: संपादकीय :

हमें यह पुस्तक प्रस्तुत करते हुए बड़ा हर्ष होता है। मैंने जीवन में धर्म को समझकर उतारने का हमेशा प्रयत्न किया है और नवतत्त्व पुस्तक में से पाप तथा आश्रव तत्त्व को समझा, तब से धीरे धीरे व्रत ग्रहण की ओर बढा। व्रतों को संपूर्ण अपना लेने के बाद जीवन को सरल तथा सत्यमय बनाने के प्रयत्न चलते रहे और जीव विचार तथा नवतत्त्व दोनों प्रकरणों को पढ़ाने का मौका मिला। उनके पठन पाठन अनुशीलन परिशीलन तथा स्वाध्याय से वे दिलमें बैठ से गये हैं और धीरे धीरे धर्मतत्त्व जमता गया है।

इसी खोजमें पंचसूत्र मिला-उसके दो सूत्र अच्छी तरह समझने का प्रयत्न किया। पू० पं०जी श्री भानु-विजयजी (अब आचार्य) की 'उच्च प्रकाशमा पंथे' गुजराती पुस्तक में से पंचसूत्र का विवेचन पढ़ा और प्रथम सूत्र का कुछ समय पाठ भी किया। दूसरे सूत्र से यह पता चला कि श्रावक को किस तरह अपना जीवन जीना चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीक्षा के लिए गुरु की खोज में पू० अमरेन्द्र-विजयजी म०सा०से भेंट हुई और उन्होंने समाधि विचार नामक छोटी सी पुस्तक मुझे दी । उसे मैं कई बार पढ गया। उस समय तत्काल दीक्षा लेने के विचार चल रहे थे। अत: इस शुभ अवसर पर ऐसा आयोजन करने का विचार आया कि जीवन में धर्म को उतारने में अत्यंत उपयोगी इन चीजों का संग्रह और संपादन हिंदीभाषी और विशेषत: अपने वतन के लोगों के लिए हो, इसलिए यह संग्रह किया गया है।

जय वीयराय प्रार्थना सूत्र है, जिसमें वीतराग से मांगने लायक सभी चीजों का समावेश है। अत: इसे नवकार के बाद तुरन्त स्थान दिया है।

पचसूत्र के प्रथम सूत्र को पापप्रतिघात गुण बीजाधान सूत्र कहा है। इससे व्यक्ति पाप का प्रतिघात करके गुण के बीजों का आधान करे, गुण बीज बोये। इस लिए मूल सूत्र और उसके नीचे अर्थ दिये हैं। मूल सूत्र का रोज पाठ करना अच्छा रहेगा। अत: उसे मोटे टाइपमें दिया है। साथ ही अन्य टाइप में अर्थ देने से सूत्र समझ में आता रहेगा। सूत्र बहुत ही जरूरी होने से पू०पं०जी श्री भानुविजयजी (अब आचार्य) के विवेचन पर से (उनकी अनुमति के बाद) संक्षिप्त में हिंदी विवेचन अलग दे दिया है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फिर इसी पंचसूत्र का दूसरा सूत्र, साधु धर्म परिभावना मूल सूत्र दिया है और उसका अर्थ व विवेचन भी उसी पुस्तक के आधार पर दिया है। इसे व्यक्ति समझे और अपने जीवन में उतारे। जीवन किस तरह जीना चाहिये, इत्यादि इससे समझमें आयेगा। मुक्ति पथ पर आगे बढने के लिए पंचसूत्र में जो पांच सीढियें, पांच बातें बताई हैं, इनमें से श्रावक के लिए जरुरी दोनों चीजें यहां दे दी गई हैं। श्रावक अपना जीवन वैसा बनावे, श्रावक जीवन में साधु धर्म की परिभावना करे याने साधु बनने की तैयारी करता रहे। अर्थात जीवन को रागरहित बनाने के लिए आसक्ति रहित बनने का तथा जीवन को शुद्ध रूपसे जीने का प्रयत्न करे।

अंत समय में समाधि मरण मिले ऐसी हम सब की इच्छा होती है। यही जयवीयराय में खास मांगा है। इसलिए जैन श्रेयस्कर मंडल, मेहसाणा की प्रकाशित समाधि विचार पुस्तक को यहां छापा है। उसको छापने की अनुमति देने के लिए मैं हृदय से संस्था का आभारी हूं। उसमें से कुछ गाथाएं पुनरुक्ति वाली अथवा उसी बात को ज्यादा स्पष्ट रूप से ही कहने वाली होने से हमने इसमें छोड दी हैं, पर पू० अमरेन्द्रविजयजी म. सा. के आदेशानुसार गाथाओं की क्रम संख्या मूल संख्या ही रखी है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंत में श्री सिद्धचक्र आराधना के कुछ दोहे अर्थ सहित दिये हैं, जिन्हें जीवन में उतारने से जीवन समृद्ध बनेगा और सारी आराधना के लिए सारभूत से 'एगोहं' आदि संथारा पोरसी की कुछ गाथाएं देकर पुस्तक की समाप्ति की गई हैं।

आशा है लोग इसका लाभ उटायेंगे।

—अमृतलाल मोदी

पुनश्च,- पुस्तक का अच्छा सदुपयोग हो इसी लिए कीमत जाग्रत मात्र रखी गई है और उपरोक्त रकमसे अधिक जो अपने पास से लगी है, वह बिक्री से मिलने का अंदाज है।

❀ क्षमा प्रार्थना ❀

पुस्तक में मात्रा बिंदु व रेफ इत्यादि की कुछ भूलें प्रेश दोष के कारण रह गई हैं। अतः क्षमा करें। विशेष भूलें कृपया इस तरह सुधार कर पढें :—

पृ॰	पंक्ति	शुद्ध
१७	५	गुण बीयाहाण
३६	६	उपाध्यायों
४२	अंतिम	रसायन
६७	४	विषय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचमंगल महाश्रुत स्कंध

पंचपरमेष्ठि नमस्कार महामंत्र

नमो अरिहंताणं ।
नमो सिद्धाणं ।
नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं ।
नमो लोए सव्वसाहूणं ।
एसो पंच नमुक्कारो,
सव्व पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवई मंगलम् ।

मैं अरिहंत भगवंतों को नमस्कार करता हूँ ।१।
मैं सिद्ध भगवंतों को नमस्कार करता हूँ ।२।
मैं आचार्य भगवंतों को नमस्कार करता हूँ ।३।
मैं उपाध्याय भगवंतों को नमस्कार करता हूँ ।४।
इस जगत के सर्व साधुओं को मैं नमस्कार करता हूँ ।५।
ये पांच नमस्कार सर्व पाप का नाश करने वाले हैं।
तथा सर्व मंगलों में यह प्रथम मंगल (विघ्ननाशक) हैं॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रार्थना

जयवीयराय जगगुरु होऊ मम तुह पभावओ भयवं ।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठफलसिद्धि ॥१॥
लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणंच ।
सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥२॥
वारिज्जई जईविनियाणबंधण वीयराय तुह समये ।
तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ समाहिमरण च बोहिलाभो अ ।
सपज्जउ मह्न एअं, तुह नाह पणामकरणेणं ॥४॥
सर्व मंगलमांगल्यं, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

(यह जयवीयराय सूत्र चैत्यवंदन करते वक्त बोला जाता है । प्रभुसे भक्ति के फलस्वरूप जो माँगना चाहिये वह यहाँ कहा है ।)

हे वीतराग, जगतगुरु आपकी जय हो। हे भगवंत आपके प्रभावसे मुझे भवनिर्वेद, मार्गानुसारिता, इष्टफल की सिद्धि, लोकविरुद्ध आचरण का त्याग, गुरुजनों की पूजा, परार्थकरण (परोपकार), सद्गुरु-का संयोग और उनके वचनोंकी सेवा जीवनभर प्राप्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हो। हे वीतराग! आपके शासन में नियाणा बांधने की मनाही की गई है, तब भी मैं यह मांगता हूँ कि भवोभव मुझे आपके चरणों की सेवा प्राप्त हो। हे नाथ! आपको प्रणाम करने के फलस्वरूप मुझे दुख का क्षय, कर्म का क्षय, समाधिमरण और अगले जन्मोंमें बोधिका लाभ प्राप्त हो। सर्व मंगलों का मंगल स्वरूप (मंगलपना) सर्वकल्याण को करने वाला तथा सर्व धर्मों में मुख्य ऐसा जैनशासन हमेशा जयवंत हो।

विवेचन :

आत्मिक दृष्टिसे मांगी जानेवाली सभी वस्तुएं यहां मांग ली गई हैं। इनके अलावा कोई भी पौद्गलिक, भौतिक या इहलौकिक व पारलौकिक वस्तुकी जरा भी मांग नहीं करना चाहिये। वह नियाणा है, जिसकी मनाही है। इसीलिए प्रभु के चरणों की सेवा ही इसमें माँगी है।

प्रथम मांग भवनिर्वेदकी की गई है। भव याने संसार से वैराग्य उत्पन्न होना अत्यन्त आवश्यक है। अगला प्रकरण पचसूत्र का प्रथम सूत्र संसार के कुछ स्वरूप को समझाकर हमें इसकी प्राप्ति में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहायक होगा। सम्यक्त्व के लिए पहले मार्गानुसारिता की जरूरत है। लोक विरुद्ध वस्तुओं अर्थात् निंद्य कार्यों का – चोरी जुगार परस्त्रीगमन आदि सात व्यसनों का – त्याग जरूरी है। गुरुजनों की पूजा परोपकार, तथा जीवनभर सद्गुरु का संयोग तथा उनके वचनों को सेवा की मांग की है।

यहां दुखका क्षय व कर्म का क्षय मांगा है। पहले किये हुए कर्मों के फलस्वरूप दुःख या कष्ट अवश्य आवेंगे, पर प्रभुकी सच्ची सेवा तभी मिली गिनी जायगी, जब कि कर्म से प्राप्त कष्ट चित्त की समाधि का हरण नहीं कर सकें। यही दुःखक्षय है जो यहाँ मांगा है। अशुभ कर्मों का क्षय भी माँगा है। ये कर्मबंध अनुबंध के कारण होते हैं। इस चित्तसमाधि की प्राप्ति तथा अनुबंध तोडने के लिए प्रथम सूत्र आगे दिया है। तीसरी मांग समाधि मरण की है, उसका भी विचार बाद के प्रकरणों में किया जायगा। अन्त में मरणोत्तर बोधिलाभकी माँग की गई है। इसके लिए धर्म के प्रति श्रद्धा जरूरी है और धर्म की किसी भी प्रकार की आशातना से, जो बोधि प्राप्ति को रोकती है, बचना चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भव्यजीवानां समाधीप्सूनां त्रिकालमाराध्यं

श्री चिरंतनाचार्य कृत महामंगलिक

समाधि के इच्छुक भव्य जीवों के लिए
त्रिकाल आराधना योग्य

पाप प्रतिघात गुणबीजाधानसूत्रम्

(इस सूत्र को कंठस्थ करके दिनमें तीन बार (तीन संध्या) प्रणिधानपूर्वक गिनना चाहिये। इससे आत्माका सहजमल घटता है और मोक्षप्राप्ति की योग्यता दिन प्रतिदिन अधिकाधिक प्रकट होती जाती है।

इस सूत्रका जैसा नाम है, वैसा ही उसका गुण है। उसके नित्य स्मरण और पठनपाठन से अनेक भवों के संचित पाप नष्ट होते हैं और ज्ञान दर्शन चारित्र आदि गुण प्रकट होने के बीज आत्मभूमि में पडते हैं, फलतः मोक्ष प्रकट होता है। यहाँ पहले सूत्रके साथ मात्र शब्दार्थ दिया जाता है।)

णमो वीयरागाणं सव्वन्नूणं देविंदपूईआणं जह ट्ठियवत्थुवाइणं तेलुक्कगुरुणं अरुहन्ताणं भगवंताणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री वीतराग सर्वज्ञ, देवेन्द्रों से पूजित, वस्तुतत्त्व के यथार्थ प्ररूपक, तीनों लोकके गुरु, अरिहंत भगवंत को मैं नमस्कार करता हूँ।

जे एवमाइक्खंति इह खलु अणाईजीवे, अणाई जीवस्स भवे अणाइकम्मसंजोगनिव्वत्तिए, दुक्खरूवे, दुक्खफले, दुक्खाणुबंधे ।

वे कहते हैं, जीव अनादि है, उसका संसार अनादि है, उस संसार (भवभ्रमण) के कारणभूत कर्मसंयोग की परंपरा भी अनादि है। वह संसार दुःखरूप, दुःखफलक और दुःख की परंपरा वाला है।

एयस्स णं वुच्छित्ती सुद्धधम्माओ, सुद्धधम्मसंपत्ती पावकम्मविगमाओ, पावकम्मविगमो तहाभव्व-त्ताइभावाओ ।

इस भवभ्रमण का अंत शुद्ध धर्म से, शुद्ध धर्मकी प्राप्ति पापकर्म के नाश से और उनका नाश तथा-भव्यत्वादि भावोंसे होता है।

तस्स पुण विघागसाहणाणि चउसरणगमणं, दुक्कड गरिहा, सुकडाणासेवणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस तथाभव्यत्वादि को पक्व करने के (आत्मामें प्रगट करने के) तीन साधन हैं। चार शरणों का स्वीकार, दुष्कृत गर्हा तथा सुकृतों का आसेवन (व अनुमोदन) करना।

अओ कायव्वमिणं होउकामेणं सया सुप्पणि-
भुज्जो भुज्जो संकिलेसे, तिकालमसंकिलेसे ।।

अतः कल्याणकामी मुमुक्षु को सदा चित्तकी एकाग्रता पूर्वक संक्लेश के समय बारबार तथा संक्लेश न हो तब दिनमें तीन बार (त्रिकाल) ऐसा करना चाहिये।

जावज्जीवं मे भगवंतो परमतिलोगनाहा अणुत्तर पुण्णसंभारा खीणरागदोसमोहा अचिंतचिंतामणि भवजलहिपोआ एगंतसरणा अरिहंता सरणं।

ऐश्वर्यादि ऋद्धिवाले, तीनों लोकों के परम नाथ, सर्वोच्च पुण्यवाले, रागद्वेष व मोह जिनके नष्ट हो गये हैं, अचिंत्य चिंतामणि समान, भवजलतारक (जहाज), एकांत शरण योग्य **अरिहंतो** कायावज्जीव मुझे शरण हो।१।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तहा पहीणजरामरणा अवेयकम्मकलंका पणट्ठ-वाबाहा केवलनाणदंसणा सिद्धिपुरनिवासी निरु-वम सुहसंगया सव्वहा कयकिच्चा सिद्धा सरणं ।

तथा जिनका जरामरण सर्वथा नष्ट हो गया है, कर्म क्लेशरहित, सर्वबाधा रहित, केवल ज्ञान दर्शन सहित, सिद्धिपुर निवासी, अनुपम सुख के भोक्ता सर्वथा कृतकृत्य **सिद्धों** का शरण हो ।२।

तहा पसंतगंभीरासया सावज्जजोगविरया पंच-विहायारजाणगा परोवयारनिरया पउमाइनिदं-सणा झाणज्झयणसंगया विसुज्झमाणभावा साहू सरणं ।

तथा प्रशांत व गंभीर आशय वाले, सर्व पाप व्यापार से निवृत्त, पंचविध आचार को पालने वाले, परोपकार निरत, पद्मादि उपमा योग्य, ज्ञान ध्यान में लीन, सतत विशुद्ध बनते जाते भाववाले **साधु** का मुझे शरण हो ।३।

तहा सुरासुरमणुअपूइओ मोहतिमिरंसुमाली राग-द्दोसविसपरममंतो हेऊ सयलकल्लाणाणं कम्मवण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहावसू साहगो सिद्धभावस्स केवलिपन्नत्तो धम्मो जावज्जीवं मे भगवं सरणं ।

तथा सुरअसुर व मनुष्यों से पूजित, मोहांधकार को नष्ट करने में सूर्य समान, रागद्वेषरूपी जहर के लिए परम मंत्ररूप, सर्व कल्याण के हेतु भूत तथा कर्मवन के लिए अग्नि स्वरूप, आत्मा के सिद्ध भाव के साधक केवली भगवंत प्ररूपित धर्म का मुझे यावज्जीव शरण हो ।४।

सरणमुवगओ अ एएसिं गरहामि दुक्कडं ।। जं णं अरिहंतेसु वा सिद्धेसु वा आयरिएसु वा उवज्झाएसु वा साहुसु वा साहुणीसु वा अन्नेसु वा धम्मट्ठाणेसु वा माणणिज्जेसु पूयणिज्जेसु तहा माईसु वा पिईसु वा बंधूसु वा मित्तेसु वा उवयारिसु वा ओहेण वा जीवेसु मग्गट्ठिएसु अमग्गट्ठिएसु, मग्गसाहणेसु अमग्गसाहणेसु, जंकिंचि वितहमायरियं अणायरियव्वं अणिच्छियव्वं, पावं पावानुबंधि, सुहुमं वा बायरं वा मणेण वा वायाए वा कायेण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वा, कयं वा कारावियं वा अणुमोइयं वा, रागेण वा दोसेण वा मोहेण वा, इत्थं वा जम्मे जम्मंतरेसु वा, गरहियमेयं दुक्कडमेयं उज्झियव्वमेयं, वियाणियं मए कल्लाणमित्तगुरुभगवंतवयणाओ, एवमेयंति रोइयं सद्धाए, अरहंतसिद्धसमक्खं गरहामि अहमिणं, दुक्कडमेयं उज्झियव्वमेयं, इत्थ मिच्छा मि दुक्कडं, मिच्छा मि दुक्कडं, मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इन चारों के शरणों में गया हुआ मैं अपने **दुष्कृत की गर्हा** (निंदा) करता हूँ। जिन अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु या साध्वी के प्रति, अन्य भी माननीय एवं पूजनीय धर्मस्थानों के प्रति, तथा माता पिता, बंधु मित्र या उपकारी जनों के प्रति, सम्यग् दर्शनादि मोक्षमार्ग को प्राप्त अथवा अप्राप्त सामान्यतः सर्व जीवों के प्रति, मोक्षमार्ग की साधक अथवा बाधक वस्तुओं के प्रति भी मैंने जो कुछ न आचरण करने योग्य, अनिच्छनीय पाप या पाप परंपरा वाला मिथ्या आचरण (दुष्कृत), सूक्ष्म या

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बादर, मनवचन या काया से रागद्वेष या मोह से, इस जन्म में या भवांतर में, स्वय किया हो, करवाया हो या अनुमोदन किया हो, वह सब पाप मेरे लिए गर्हा करने योग्य हैं, दुष्ट कार्य है, त्याज्य हैं, ऐसा कल्याण मित्र गुरु भगवंत के वचनों से मैंने जाना है, तथा वह सच है ऐसा मुझे श्रद्धा से लगा है, अतः अरिहंत व सिद्ध समक्ष उसकी गर्हा करता हूँ। वह दुष्ट है व त्याज्य है अतः वह सब दुष्कृत मिथ्या हो, मेरा सब दुष्कृत मिथ्या हो, **सब दुष्कृत मिथ्या हो ॥**

होउ मे एसा सम्मं गरिहा, होउ मे अकरणनियमो बहुमयं ममेयंति ॥ इच्छामि अणुसट्ठीं अरहंताणं भगवंताणं गुरुणं कल्लाणमित्ताणंति ॥

मेरी यह दुष्कृत गर्हा सम्यक् भावपूर्वक हो। अब यह दुष्कृत मैं नहीं करूं, ऐसा मुझे नियम हो। मुझे यह भाव तथा नियम बहुमानपूर्वक हो। श्री अरिहंतभगवंतों की, और उनके वचनों के प्रचारक कल्याण मित्र गुरुओं की हित शिक्षाको मैं बारबार इच्छा करता हूँ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होउ मे एएहिं संजोगो होउ मे एसा सुपत्थणा, होउ मे इत्थ बहुमाणो, होउ मे इओ मुक्खबीयंति ।।

ऐसे देवगुरुओं का मुझे संयोग हो, मेरी यह प्रार्थना सफल हो, मुझे इस (प्रार्थना) के प्रति बहुमान हो। इससे मेरी आत्मा मोक्षबीजवान् बनो।

पत्तोसु एएसु अहं सेवारिहे सिया, आणारिहे सिया पडिवत्तिजुत्ते सिया, निरइयारपारगे सिया।

इन देव व गुरु का संपर्क (निश्रा) प्राप्त होने पर मैं उनकी सेवा के योग्य बनूं, उनकी आज्ञा पालन के लायक बनूं। आज्ञापालन में उद्धार है, ऐसी दृढ़ प्रतिपत्तिवाला मैं उनकी आज्ञा को भक्ति बहुमानपूर्वक स्वीकृत कर निरतिचारपूर्वक उनकी आज्ञाका पालक बनूं।

संविग्गो जहासत्तिए सेवेमि सुक्कडं, अणुमोएमि सव्वेसिं अरहंताणं अणुट्ठाणं, सव्वेसिंसिद्धाणं सिद्धभावं, सव्वेसिं आयरियाणं आयारं, सव्वेसिं उवज्झायाणं सुत्तपयाणं, सव्वेसिं साहूणं साहुकिरियं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सव्वेसिं सावगाणं मुक्खसाहणजोगे, सव्वेसिं देवाणं, सव्वेसिं जीवाणं होउकामाणं कल्लाणासयाणं मग्गसाहणजोगे ॥

संविग्न (मोक्ष तथा मोक्षमार्ग का इच्छुक) मैं यथाशक्ति सुकृतों का स्वयं आसेवन करूं तथा अन्यों के सुकृतों की अनुमोदना करता हूँ। सर्व अरिहंतों के सर्व अनुष्ठानों की, सर्व सिद्धों के सिद्ध भावों की सर्व आचार्यों के आचार की, सर्व उपाध्यायों के सूत्रदान की, सर्व साधु (साध्वी) के साधु क्रियाकी, सर्व श्रावक (श्राविकाओं) के मोक्ष साधना की क्रियाओं की, सर्व देवों तथा सर्व जीवों के विशुद्ध आशय तथा मोक्ष साधक सर्व योगों की अनुमोदना करता हूँ।

होउ मे एसा अणुमोयणा सम्मं विहिपुव्विया, सम्म पडिवत्तिरूवा, सम्मं निरइयारा परमगुणजुत्तअरहंताईसामत्थओ ॥

परमगुण निधान अरिहंतादि के सामर्थ्य से मेरी यह अनुमोदना सम्यक् विधिपूर्वक, उत्तम निर्मल आशय वाली, सम्यक् स्वीकार वाली, तथा सम्यक् निरतिचार रूप हो।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अचिंतसत्तिजुत्ता हि ते भगवंतो वीयरागा सव्वण्णु परम कल्लाणा परमकल्लाण हेउ सत्ताणं ।।

वे वीतराग सर्वज्ञ भगवंत अचिंत्य शक्ति युक्त हैं, परम कल्याणकारी हैं और सर्व जीवों के परम कल्याण में हेतु रूप हैं ।

मूढे अम्हि पावे अणाइमोहवासिए, अणभिन्ने भावओ, हियाहियाणं अभिन्ने सिया । अहिय-निवित्ते सिया, हियपवित्ते सिया,आराहगे सिया उचियपडिवत्तीए,सव्वसत्ताणं सहियंति।इच्छामि सुक्कडं, इच्छामि सुक्कडं, इच्छामि सुक्कडं ।

मैं मूढ हूँ, पाप से, अनादि मोह से, वासित हूँ। अतः अनभिज्ञ (अज्ञानी) हूँ । अब मैं मेरे हिताहित भावों को जाननेवाला, हित में प्रवृत्त, अहित से निवृत्त, आराधनामें प्रवृत्त, तथा सर्व जीवों के साथ औचित्य के आचरण सहित आराधक बनूं । इस प्रकार के सुकृतों का मैं इच्छुक हूँ, सुकृतों का इच्छुक हूँ, सुकृतों का इच्छुक हूँ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवमेयं सम्मं पढमाणस्स सुणमाणस्स अणुप्पेह-माणस्स सिढिलीभवंति परिहायंति खिज्जंति असुहकम्माणुबंधा निरणुबंधे वासुहकम्मे भग्ग-सामत्थे सुहपरिणामेणं, कडगबद्धे विव विसे अप्पफले सिया, सुहावणिज्जे सिया, अपुणभावे सिया ।

इस प्रकार (चार शरण, दुष्कृत गर्हा तथा सुकृत अनुमोदन को) जो सम्यक् रूप से पढता है, सुनता है, (सूत्र के अर्थ सहित पुनः पुनः चिंतन से) अनुप्रेक्षा करता है, उसके अशुभ कर्मबंध शिथिल होते हैं, कम होते हैं और क्षीण भी होते हैं। अरे इस (सूत्र पठन व अनुप्रेक्षा) से वे अशुभ कर्म (उनके रस, स्थिति व प्रदेश) निरनुबंध होते हैं, उनकी शक्ति भग्न होती है। इससे उत्पन्न शुभपरिणाम से कटक बद्ध से जैसे जहर निर्बल तथा निष्फल होता है, वैसे अशुभ कर्म भी अल्प फलवाले, सुखपूर्वक निर्जरा करने लायक तथा पुनः कर्मबंध न हो वैसे बन जाते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तहा आसगलिज्जंति परिपोसिज्जंति निम्मविज्जंति सुहकम्माणुबंधा, साणुबंधं च सुहकम्मं पगिट्ठं पगिट्ठभावज्जियं नियमफलयं, सुप्पउत्तो विव महागए सुहफले सिया, सुहपवत्तगे सिया, परमसुहसाहगे सिया।

तथा इस सूत्र पाठ अनुप्रेक्षादि से शुभ कर्म बंध के भाव प्रकट होते हैं, शुभ कर्मबद्ध होता है, शुभकर्म की परंपरा पुष्ट होती है और उत्कृष्ट शुभ कर्म का बंध होता है। शुभ भावपुष्ट होते हैं, निश्चित रूपसे शुभ फलदायक बनते हैं और आत्मा सुखोपभोगपूर्वक परम शुभ (मोक्ष) का साधक बन जाता है।

अओ अपडिबधमेय असुह भावनिरोहेण सुहभावबीयति सुप्पणिहाण सम्मं पढियव्व, सम्मं सोयवं सम्मं अणुपेहियव्वति।

इससे प्रतिबंधरहित, अशुभभाव का निरोधक यह सूत्र शुभ भाव के बीज बोता है, अतः इसे प्रणिधानपूर्वक अच्छी तरह पढना चाहिये, सुनना चाहिये और सम्यक् अनुप्रेक्षा करना चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णमो नमियनमियाणं परमगुरुवीयरागाणं नमो सेस नमुक्कारारिहाणं। जयउ सव्वण्णुसासणं ।। परमसंबोहीए सुहिणो भवंतु जीवा, सुहिणो भवंतु जीवा, सुहिणो भवंतु जीवा ।१। पंचसुत्तो पढमं पावपडिग्घाय गुण बीयाहाणसुत्तं सम्मत्तं।।१।।

वंदनीयों के भी वंदनीय परम गुरु वीतराग को मैं नमस्कार करता हूँ। शेष नमस्कार योग्य सिद्ध आचार्यादि को मैं नमस्कार करता हूँ। श्री सर्वज्ञों का शासन जयवंत हो और शासन के वरबोधि लाभ से जीवों को सुख हों, जीव सुखी हो, जीव सुखी हों ।

इस तरह पंचसूत्र में से पाप प्रतिघातक तथा गुणबीजाधान करने वाला यह प्रथम सूत्र पूर्ण हुआ।

★

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री चिरंतनाचार्य विरचित पंचसूत्र की
श्री हरिभद्रसूरि महाराज द्वारा रचित टीका पर से
प्रथम सूत्रका (संक्षिप्त) हिन्दी विवेचन

जीव अनन्तकाल से संसार में भटक रहा है। उसमें से छूटने का उपाय इस सूत्र में बताया गया है।

इसमें पांच सूत्र हैं। पांचवाँ सूत्र–प्रव्रज्याफल–मोक्ष की प्राप्ति बताता है, जिसके लिए प्रथम कारण है, पाप का प्रतिघात। पाप याने अशुभ अनुबंध के आश्रवभूत गाढ मिथ्यात्व, भवरुचि आदि। वे पाप आत्मा पर से अपनी पकड छोड दें, यह उनका घात हुआ। इससे आत्मा में गुणबीज बोया जा

महान शास्त्रकार सूरिपुरन्दर श्रीहरिभद्रसूरिजी ने अर्थ गंभीर टीका लिखी है। टीकाकार महर्षि के विवेचन के आधार पर प. पू. आ. श्री विजयप्रेम-सूरीश्वरजी के शिष्यरत्न पू. पं. जी म. सा. श्रीभानुविजयजी ने गुजराती में 'उच्च प्रकाशना पंथे' नामक विस्तृत विवेचन प्रकट किया है। उसके आधार पर यहाँ संक्षिप्त हिन्दी विवेचन दिया गया है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सकता है । साधु व श्रावक के गुण, वे गुण हैं जो आत्मा में आने से ही अन्तिम फलको प्राप्ति संभव है।

प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ भी कार्य करता है, वह रागद्वेष वश करता है । इससे कर्मबंध होता है। इन कर्मों के उदय के समय पुनः नये कर्मों का बंध होगा। इसे अनुबंध कहते हैं। इस अनुबंध को, पाप के निरंतर आश्रव को, तोडना ही अति आवश्यक है । यही कार्य यह प्रथम सूत्र करता है ।

गुण अर्थात् धर्मगुण, दर्शन ज्ञान तथा चारित्र याने विरति-देश या सर्व। इसकी प्राप्तिके लिए गुण के बीज को बोना पड़ेगा । पाप के प्रतिघात बिना धर्म गुण के बीज कैसे बोये जावेंगे ?

धर्मगुण की प्राप्ति ही सच्ची प्राप्ति है । इसकी अप्राप्ति पर अन्य सब प्राप्ति अप्राप्य या नष्ट है। अशुभ कर्म के अनुबंध करवाने वाले मिथ्यात्वादि आश्रव को उखाड कर अशुभ का अनुबंध रोककर शुभकर्म का अनुबंध जगाना जरूरी है । अन्यथा शुभकर्म भी उदय में आकर अनुबंध बिना स्वयं नष्ट हो जावेंगे ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पहले पाप का प्रतिघात करके धर्मगुण के बीज का आरोपण करें। फिर साधु धर्म की परिभावना, झंखना, इच्छा व तैयारी करें (दूसरा सूत्र)। तब साधु धर्म ग्रहणकर उसे पालें तो फल मोक्ष मिलेगा। यदि यह क्रम न लेकर उलटासुलटी कार्य किया तो सब प्रयास वृथा होगा। संसार, भव का भ्रमण चालू रहेगा। क्रमिक प्रयास रहित साधु धर्म की प्राप्ति भी गुणप्राप्ति न होकर गुणाभास बन सकती है।

भवाभिनंदी जीव जिसे भव या संसार में ही आनन्द है, अपने दूषणों के कारण गुणबीज के पवित्र पदार्थ की प्राप्ति का प्रयत्न नहीं करता। धर्म करके भी, दीक्षा लेकर भी, वह संसार ही बढायेगा। भवाभिनन्दी के आठ दुर्गुण हैं :-

क्षुद्रो लोभरतिर्दीनो, मत्सरी भयवान् शठः।
अज्ञो भवाभिनन्दी स्यात् निष्फलारंभ संगतः ॥१॥

उसका हृदय क्षुद्र, तुच्छ होता है। वहाँ श्रद्धा नहीं होती, तत्त्वरुचि नहीं होती। तत्त्व की बातें गले उतरनी चाहिये, टिकनी चाहिये। (२) लाभ होने पर वह खुश होता है। लोभ अच्छा है, करना चाहिये आदि कहता है, सोचता है, यह है लोभरति।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३) दीनता - बात बात में दुःखी होता है। सब अच्छा मिले और जरा कुछ भी कम हो तो रोने बैठे। (४) मत्सर, ईर्षा, असहिष्णुता। किसी का अच्छा, भलाई या सुख देखा नहीं जाता। दीनता में न मिलने का दुःख है, मत्सर में दूसरे को मिलने का दुःख है और (५) भय में प्राप्त वस्तु के खोने का डर है। यह चिंता का दुःख है। इससे दुर्ध्यान होता है। हाय, हाय, चला जायगा इत्यादि। आर्त-ध्यान और रौद्रध्यान भी इसीसे आता है। (६) शठता- प्रत्येक बात में माया, कपट, विश्वासघात करता है। (७) अज्ञता दो प्रकार से - मूर्खता व मूढता। मूर्खता में समझ या बुद्धि नहीं। लूटो, इकठ्ठा करो, मौज करो आदि मूर्खता है। मूढ़ता में पढा है, तब भी मूढ। ज्ञान है पर विवेक नहीं। आत्मभान नहीं है। मानव पशुसे क्यों विशेष है, यह न जानना, तत्त्व या धर्म न समझना अथवा उसे जानते हुए भी उसका प्रयत्न न करे वह मूढता है। (८) निष्फलारंभसंगता - भवाभिनन्दी विचार रहित (मूर्ख) या उलटे विचार (मूढ) से निष्फल कार्य ही करेगा। उसे लक्ष्मी मिली हो, तो भी वह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निष्फल हैं, क्योंकि उसे उसका आनन्द या शांति नहीं ।

इन सब दोषों को हटाने के लिए खास सावधान रहना जरूरी है। दुर्गुणों का अभ्यास अनन्त कालसे है । इन दुर्गुणों के प्रतिद्वंद्वी गुण उदारता, संतोष धीरज आदि बडी कठिनाई से आते हैं । पंचसूत्र स्वीकार करने के पहले ये दोष हटने चाहियें । भवाभिनन्दिता तथा इन दोषों से तत्त्व की रुचि नहीं होती, सच्चा तत्त्व उसे समझ में ही नहीं आता। कम से कम इन दोषों को पहचानना, उनका अपने में होने का स्वीकार तथा दूर करने की इच्छा अति आवश्यक है । पंचसूत्र महान रसायन है। रसायन दोष रहित शरीर में पचता है । अतः पंचसूत्र भी लायक को ही समझ में आता है, लायक को ही दिया जाता है ।

साधना की इमारत की रचना पाप प्रतिघात आदि क्रम से ही हो सकती है । पहले इन दुर्गुणों का नाश, इस साधना क्रम पर श्रद्धा तथा इस क्रम के अनुसार धर्म पुरुषार्थ होना चाहिये । पुनः कहें तो क्रम है-गुणबीजारोपण, साधुधर्म की परिभावना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसकी ग्रहण विधि, पालन तथा फ़ल (मोक्ष)। यह धर्म पुरुषार्थ भी सतत, विधिपूवक, हृदय के बहुमानपूवक, योग्य समय पर तथा जीवन में औचित्य सहित होना चाहिये। तभी सबीज क्रिया की प्राप्ति तथा पालन से परंपरा द्वारा मोक्षफल प्राप्त होगा। सावधानी होशियारी से दोष दूर करके गुणों की प्राप्ति का प्रयत्न करें।

अरिहंत भगवान को प्रथम नमस्कार करके सूत्रकार मंगलाचरण करते हैं। वे बीतराग - राग द्वेष रहित हैं, उनका मोह क्षीण हो गया है। जिनेश्वर देवेन्द्रों से पूजित हैं तथा यथास्थित वस्तु-वादी याने वस्तु जैसी असल में है वैसी ही कहने वाले हैं।

राग द्वेष से भी ज्यादा खतरनाक है। 'राग नहीं करना', ऐसा जैनशासन में ही कहा है, अन्यत्र नहीं। द्वेष घटता है. पर राग बढता है। द्वेष में जो दुर्ध्यान होता हैं, रागमें उससे ज्यादा दुर्ध्यान होता हैं। राग द्वेष का बाप है। राग फूंक मारकर काटने वाले चूहे जैसा है। क्रोधादि चारों कषाय राग की सेवा में। आठों कर्मों की जड मोहनीय और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसकी जड राग में हैं। तीव्र कोटि का राग नहीं जाता, तबतक मिथ्यात्व नहीं जाता। यह राग धनमाल आदि जड के प्रति तथा पुत्र पत्नी आदि व्यक्ति याने चेतन के प्रति भी होता है।

तीव्र राग में कषाय (क्रोध, मान आदि चारों) करने जैसे लगते हैं। यही तीव्र कषाय अनन्तानुबंधी है। जब तक ये हैं, तब तक संसार का रस तथा अतत्त्व का दुराग्रह हृदय में से हटेगा नहीं। हिंसा, झूठ, चोरी आदि पाप किस के लिए ? पुत्र, पत्नी या धन के लिए या उनपर राग के कारण।

प्रशस्त राग बंधन कर्ता नहीं, पर छुडाने वाला है। देव गुरु व धर्म के प्रति राग प्रशस्त राग है इससे पाप बंध नहीं होता। प्रशस्त राग में लेश्या धर्म की है। संसार के लाभकी अपेक्षा से होने वाला राग अप्रशस्त है। संसार से मुक्त होने और उसके उपाय के लिए राग प्रशस्त राग है। धर्म लेश्या की मात्रा व वेग (Force) जितने कम उतना पुण्य कच्चा। धर्म की लेश्या-भावना जोरदार उतना पुण्य भी जोरदार। शालिभद्र की लेश्या ऊंची थी। पेट की पीडा के समय उसका अकमात्र ध्यान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरु में और खीर का दान करवाने के उनके उपकार में। **कैसा सुन्दर योग, खीर का दान, वह भी महात्मा को।** ऐसी दान धर्म की अनुमोदना से ही वह शालिभद्र बना, जहाँ वैराग्य प्राप्त करने वाली लक्ष्मी मिली।

राग आत्मा में वस्तु के प्रति आकर्षण पैदा करता है। राग द्वेष से भी खूब बलवान तथा महा अनर्थकारी है। राग आत्मा को रंगता है। अतः जो इष्ट के प्रति आकर्षण रहित तथा अनिष्ट के प्रति अप्रीति रहित हैं, वे ही **वीतराग** हैं।

मोह आत्मा को भयंकर नुकसान करता है, पर साथ ही नुकसान को लाभ में गिनाता है। मोह के कारण आनन्द से राग करता है, राग को हितकारी मानता है। आत्मा में से मोह (मिथ्यात्व) के हटने से राग दुश्मन लगेगा। मोह भान भुलाता है, दोष का बचाव करता है। मोह दोष को गुण समझेगा, यही भयंकर है।

सर्वज्ञ के ज्ञान का प्रकाश जबरदस्त होता है। अनन्तानन्त काल की सर्व घटना, सर्व भाव, त्रिकाल के सर्व जीवों के सर्व भाव तथा सर्व पदार्थों के सर्व

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पर्याय केवल ज्ञानी एक ही समय में देखते हैं।

प्रभु देवेन्द्र पूजित हैं। देव मानवभव प्राप्त कर के प्रभु के समान शुद्ध भाव सहित उनके समान शुद्ध चारित्र की प्राप्ति के लिए प्रभु की पूजा करते हैं। 'दीक्षा केवलने अभिलाषे नित नित जिन गुण गावे।'

जो तत्त्व प्रभु को मिला, उसे यथास्थित जीवों के हितार्थ सभी जीवों के सन्मुख रखा। प्रभु नव तत्त्व के प्ररूपक तथा त्रिपदी (सर्व वस्तु उत्पन्न होती है, टिकती है तथा नष्ट होती है) के उपदेशक हैं। प्रभु के इस रूप के स्वीकार से मोह की प्रबलता घटती है।

जिन के स्वयं के कर्म जलकर बीज रहित हो चुके हैं वे (अरुहंत) भगवंत कहते हैं:- (१) जीव अनादि काल से है, (२) जीव का संसार अनादि काल का है और (३) वह संसार अनादि काल से चले आने वाले कर्मों के संयोग से बना है। अतः वह संसार (१) दुखरूप है (२) दुःख फलक (फल-स्वरूप दुःखद) है और (३) दुःख की परंपरा (अनुबन्ध) का सर्जक है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यही समस्त जिन वाणी का सार है। संसार में दुःख ही दुःख है, सुख तो है ही नहीं। जो है वह है मात्र सुखाभास। पुण्य से जो सामग्री मिलती है वह है परिग्रह, वही पाप है। संसार का सभी सुख मात्र सांयोगिक है। संयोग में वियोग छिपा होने से वह दुःखरुप है। जो विषय सुख है वह केवल दाद या खुजली को खुजालने जैसे सुख सा है। जन्म, मृत्यु, रोग, शोक आदि सब दुःख हैं, यही संसार है।

संसार दुःख फलक है, संसार भवांतर में जन्म जरा आदि दुःख देने वाला है। पूर्वसंचित कर्म से उत्पन्न शरीर तथा अन्य संयोगरूप संसार हमें भोगना पडता है और उसके फलस्वरूप पुनः नये कर्म बंध होकर नये जन्मादिरूप दुःखरूप संसार की उत्पत्ति होती है।

पुनः वह अनेक जन्मों के दुःख की परंपरा का सर्जक भी है। क्योंकि वर्तमान जन्म में जीवन को बिताते हुए, पिछले कर्मों को भोगते हुए नये इतने ज्यादा कर्मों का बन्ध होता है कि पुनः अनेक जन्म लेने पड़ेंगे और उन उन जन्मों में पुनः कर्म

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बन्ध तो चालू ही रहेगा । इसीलिए संसार दुःखानुबन्धी है ।

हमारा जीव अनादिकाल का है । अनन्त काल बीत गया पर इसका भटकना चालू है । इस अनन्त काल में इसने कितने घोर कष्ट भोगे होंगे ? क्या फ़िर भी संसार से इसे थकान लगी ? लगी हो तो संसार का अन्त लाने के लिए कटिबद्ध क्यों न हो? अफसोस, हम इस अमूल्य मानव भव को व्यर्थ खो रहे हैं। अनन्त काल के मुकाबले अल्पकाल के मानव भव में थोडा कष्ट उठाकर पालन किया गया चारित्र-संयम हमें हमेशा के लिए मुक्ति दिलाने में समर्थ है । इसीलिए यह मानवभव अत्यन्त अमूल्य है । लाखों के हीरे से मुट्ठीभर चने खरीदने की तरह तुच्छ व आत्मघातक विषय सुख खरीदने में जीवन व्यर्थ खो रहा है । ओह जीव ! जरा ठहर, सोच, तू क्या कर रहा है ? क्या करना चाहिये ?

क्या इस संसार को घटाने व मिटाने का उपाय है ? हां है। वही यहां कहा है।

संसार की भयानकता से बचने का एकमात्र स्थान मोक्ष है । यदि वह हमारा ध्येय बन जाय,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तो हमारा लक्ष्य शून्य परिभ्रमण मिटकर हम सच्चे रास्ते पर आ जाते हैं। हम आज तक गलत दिशा में चल रहे थे, उसके बदले सच्ची दिशा में जाने लगते हैं। मानवभव इसीलिए अत्यन्त कीमती है कि वह सच्ची राह पर चलने का प्रयत्न करे उसका प्रारंभ करे। यहाँ इसी सच्ची दिशा का दर्शन किया गया है।

इस संसार (भवभ्रमण)का उच्छेद (अन्त)शुद्ध धर्म से होता है। उसके लिए ये चार वस्तुए जरुरी हैं। (१) औचित्य – शुद्ध धर्म की प्राप्ति के लिए औचित्य आवश्यक है। उदा० अनुचित आजीविका या अयोग्य बर्ताव से आत्मा कठोर बनता है। औचित्य पालन से मुलायम बनी हुई आत्मा में ही धर्म अन्दर उतरेगा। अन्यथा धर्म साधना से भी अनादि कुसंस्कार नहीं मिटेंगे। (२) सतत – मिथ्यात्व, अज्ञान, हिंसादि पाप तथा अविरति से अनन्त भूतकाल में सतत धाराबद्ध पाप प्रवृत्ति होती रही है और ये चारों दृढ बने हैं। अतः इन्हें मिटाने के लिए सत्प्रवृत्ति भी सतत होनी चाहिये। जैसे दीर्घ रोग के लिए सतत औषध सेवन। (३) सत्कार– आदर रहित किये कार्य की कोई कीमत नहीं। राग के सादर सेवन से ही

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संसार बढ़ा है। धर्म भी आदर रहित सेवन से हृदय मे स्थान प्राप्त नहीं करता। (४) विधि - औषधि सेवन अनुपान तथा कुपथ्य त्याग की विधि से ही तो लाभप्रद होता है। अतः भवरोग निवारक धर्म औषधि का विधि सहित सेवन होना चाहिये।

औचित्य में योग्य व्यवसाय, उचित लोक व्यवहार, उचित रहनसहन, भाषा, भोजन, उचित वर्तांव आदि का समावेश होता है। सातत्य मे प्रत्येक धर्म प्रवृत्ति नित्य नियमित सतत होनी चाहिये। धर्म तथा धर्मी पर रत्न निधान सा आदर हो। विधि में शास्त्रोक्त काल, स्थान, आसन अवलंबन आदि सब विधि का पालन जरूरी है।

शुद्ध धर्म को भाव सहित आत्मा में स्पर्श होना चाहिये। यह स्पर्श मिथ्यात्वादि पाप नाश से ही होता है। इस विशिष्ट (जो पुनः उत्पन्न न हो) पाप नाश के लिए तथा भव्यत्वादि भावों का संयोग होना चाहिये। साध्य व्याधि जैसे तथा भव्यत्व के परिपाक से ही मोक्षरूप भाव आरोग्य की प्राप्ति होती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा भव्यत्व के परिपाक के साधन तीन है :-
चार शरण, दुष्कृत गर्हा तथा सुकृतानुमोदन ।
अरिहंतादि चार के शरण ही सच्चे शरण हैं, सर्व आपत्ति में से बचने का श्रेष्ठ उपाय है । सभी दुष्कृतों की पश्चात्तापपूर्वक गुरुसाक्षी से गर्हा कर्मों के अनुबन्ध तोडने की अमोघ शक्ति रखती है । सुकृत की आसेवना-उत्तम गुणों की अनुमोदना आत्मा में गुण उत्पन्न करती है ।

तथा भव्यत्वादि (काल, नियति, कर्म तथा पुरुषार्थ सहित पांच कारण) भावों के अनुकूल सयोग की प्राप्ति से पाप कर्मों का विशिष्ट नाश (पुनः उत्पन्न न हों वैसे) होता है । औचित्य, मान्यता, आदर तथा विधि चारों सहित इन तीनों उपायों के सेवन से पाप का प्रतिघात होकर गुणबीज का आरोपण आत्मा में होता है । अथवा यों कहिये कि इन तीन उपायों के विधि आदि चारों सहित सेवन से तथा भव्यत्व का परिपाक होता है, जिससे पाप नाश होकर शुद्ध धर्म की प्राप्ति होने से भव का, जो दुःखरूप, दुःखफलक व दुःखानुबन्धी है, नाश होता है । इसीलिए मोक्षार्थी जीव सुप्रणिधान पूर्वक इसका सेवन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करे। तीव्र संक्लेश – गाढ रागद्वेष, अति हर्ष या उद्वेग, तीव्र रति, अरति अर्थात् तीव्र कषायों में –इसका बारबार सेवन करें तथा संक्लेश रहित स्वस्थ अवस्था में भी रोज त्रिकाल इन तीनों साधनों का सेवन करें।

चतुः शरण का स्वीकार भावपूर्वक होना चाहिये। मुझे शीघ्र मुक्ति मिलना चाहिये यही भाव दिल में रहना चाहिये। इससे ही अशुभ कर्म के अनुबन्धक मिथ्यात्व तथा भवरुचि आश्रवों का त्याग होता है। यही पाप प्रतिघात है यही अनुबन्ध को तोडने वाला तथा उसे शिथिल करने वाला है। फिर तो गुणबीज आत्मभू में पडेगा ही न?

जीवनभर अरिहंत का शरण हो। वे देवाधिदेव त्रिलोकनाथ हैं। श्रेष्ठ तीर्थंकर नाम कर्म के पुण्य सहित हैं, तभी हर समय जन्म से ही देव देवी उनकी सेवा करते हैं और केवल प्राप्ति बाद करोडों देव हर समय हाजिर होते हैं। उनके राग, द्वेष तथा मोह का संपूर्ण नाश हो चुका है (अतः मुझे भी यह गुण मिले) वे चिन्तामणि रत्न की तरह चिन्तित वस्तु देने वाले ही नहीं, अचिंत्य पदार्थों

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के दाता भी है । भवजलधि से तारक पोत(जहाज) समान हैं । वे संपूर्ण रूपसे शरण लायक हैं । अतः अष्टमहाप्रातिहार्य वाले अरिहंत मेरे शरणरूप (रक्षक) हों

अजरामर, कर्म कलंक रहित, सर्वथा बाधा (व्याघात) रहित, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, मोक्षपुरी में स्थित अनुपमेय, (असांयोगिक, सहज) सुख सहित, सर्वप्रकार से कृतकृत्य (सर्व प्रयोजन सिद्ध) सिद्ध भगवंतों का मैं शरण लेता हूँ । भूख, तृषा, वेदना, इच्छा अज्ञान, आदि सर्व दोष रहित होने से परम तत्व हैं. परम सेव्य है । वे ही मेरे लिए शरण हैं ।

प्रशांत तथा गंभीर आशय वाले क्षमाधारी साधु शरण हों। उनका चित्त प्रशांत हैं तथा गंभीर (क्षुद्र नहीं) चित्तवाले हैं । संसार की सर्व सावद्य (पापकारी) प्रवृत्ति से रहित हैं । षट्काय जीव संहार के करने करवाने से ही नहीं, अनुमोदन से भी वे दूर हैं। पंचाचार के ज्ञाता, परोपकार में रक्त हैं । उनका उपकार भी शुद्ध है, बदलेकी भावना से रहित हैं तथा सम्यक्त्व दानरूप भाव उपकार होने से अन्तिम हैं । साधु काम कीचड़ से उत्पन्न, भोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जलसे बडे होने परभी दोनों से कमल की तरह अलिप्त हैं। वे ध्यान तथा अध्ययन में लीन रहते हैं। समिति गुप्ति स्वाध्याय आदिसे आत्म भावों को उत्तरोत्तर विशुद्ध करते रहते हैं। अतः इन वस्तुओं की प्राप्ति के लिए जिनसे क्रमशः मोक्षप्राप्ति होगी, मैं उनका शरण स्वीकार करता हूँ। (वे भावी नय से सिद्ध हैं)।

अरे! मानव भव की कैसी सफलता? सचमुच ही यदि काम, क्रोधादि, मोह, हास्य, मद मत्सर रति अरति जैसे दुष्ट भावों को उनके प्रतिद्वंद्वी गुणों से धो कर इस जन्म में नहीं मिटाये तो वह कार्य कब होगा?

चौथा शरण धर्म का है। सुर (ज्योतिषी व वैमानिक) तथा असुर (भवनपति व व्यतर) से धर्म सेवित है। अतः जगतकी समृद्धि के किसी भी दाता से ज्यादा सेवनीय हैं। इस उच्चतम धर्म प्राप्ति का गौरव मन में होना चाहिये। मोह तिमिर को हटाने में वह सूर्य सम है। रागद्वेष रूपी विषके लिए (उसे हरने वाला) परम मंत्र समान है। धर्म का शरण लेने वाला कोई आशंसा या आकांक्षा नहीं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रखता क्योंकि वे राग विष के पोषक हैं। जहां धर्म प्रवृत्ति के बदले राग तांडव हो वहां से वह दूर रहे। धर्म सकल कल्याणकारी है। वह कर्मवन को, जहाँ दुःख व क्लेश के फल उत्पन्न होते हैं, जलाने में अग्नि समान है। सिद्धभाव अर्थात् मुक्ति का साधक है। ऐसे जिन प्रणीत धर्म का शरण मैं यावज्जीव के लिए स्वीकार करता हूँ।

अरिहंतादि चारों का शरण प्राप्त करके (शरण सहित) मैं अरिहंतादि के प्रति सेवन किये हुए अपने दुष्कृत्यों की गर्हा, निंदा करता हूँ। आज तक श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी अथवा अन्य माननीय पूजनीय धर्मस्थानों के प्रति, (अनेक जन्मों के) माता, पिता, बन्धु, मित्र या उपकारी, मोक्षमार्ग पर गमन करने वाले सामान्यतः प्रत्येक जीवों के प्रति तथा मोक्षमार्ग के उपयोगी (मन्दिर पुस्तकादि) साधनों या अनुपयोगी साधनों (इन सब) के प्रति जो कुछ विपरीत आचरण किया हो, अनिच्छनीय, अनाचरणीय या कुछ भी न करने योग्य या न सोचने योग्य कोई भी पाप किया हो, उस पाप के विपाक में पुनः पाप बन्ध हो वैसा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किया हो, सूक्ष्म या बादर, मन वचन कायासे किया, करवाया या किये को अच्छा जाना हो, राग द्वेष या मोह से, इस जन्म में या जन्मांतर में जो दुष्कृत किया हो, जो ऐसा आचरण किया हो, वह सब गर्हित, निन्द्य तथा त्याज्य है (क्योंकि वह सम्यक् धर्म से भिन्न तथा विपरीत है।) अतः उसका मैं पुनः पुनः मिच्छामि दुक्कडं देता हूँ। मिथ्या दुष्कृत मूल में तीन बार कहने का अर्थ यही है कि इस पर खूब भार दिया जाय तथा वह बार बार किया जाय।

यह सब बात मैंने हमारे कल्याणमित्र – मात्र परहित चिंतक – गुरुके वचनों से, अरिहंत भगवंत के वचनों से (शास्त्रसे) जाना है। उनके हितवचनानुसार यह गलत आचरण त्याज्य और दुष्कृत्य है, ऐसी मुझे श्रद्धा है, मनमें यह ठस गया (जँच गया) है। अतः मेरे सब दुष्कृत मिथ्या हों, अनेकशः मिथ्या हों।

ये दुष्कृत अच्छी तरह समझ लेने चाहिये। इन सब अरिहंतादि चार के प्रति अवहेलना, अविनय, अनादर, आज्ञा की अवहेलना, विराधना, अश्रद्धा, अशुद्ध प्ररूपणा आदि सब विपरीत आचरण (दुष्कृत)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं। अतः हमें इससे बचना चाहिये। मुक्तिसुख की शंका सिद्धों के प्रति दुष्कृत है। ज्ञान की शंका भी यही है।

पूर्व दुष्कृतों की सच्ची गर्हा के लिए हृदय की मृदुता जरूरी है। अतः अहंभाव का त्याग आवश्यक है। चतुः शरण से यह प्राप्त होता है, पर वह सच्चे दिल से हो, हमेशा, हर समय हो। तभी तो अनेक जन्मों के कर्म जो पाप की परंपरा के सर्जक हैं, वे वंध्य बनकर निर्बीज बनेंगे।

अहं का त्याग, कोमल नम्र हृदय, दोषों का तिरस्कार, स्वच्छन्द व निरंकुश वृत्तिको दबाना व उसमें कमी, दोष तथा दोषित आत्मा की दुगंछा, दोषों के पोषक कषायों के उपशम सहित उनके प्रति द्वन्द्वी क्षमादि धर्मों का आलंबन व उन गुणों की प्राप्ति आवश्यक है।

मेरी दुष्कृत की गर्हा सम्यक् व हार्दिक हो मात्र शाब्दिक नहीं। अर्थात् वे जराभी अच्छे या करने लायक नहीं लगे। साथ ही उनके किसी भी प्रकार से पुनः न करने का मुझे नियम हो।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुष्कृत की गर्हा व अकरण नियम (या चतुः शरण व गर्हा) के प्रति मुझे बहुमान पूर्वक रुचि हो। मैं देव और गुरुकी हित शिक्षा व अनुशास्ति की इच्छा करता हूं। देव और गुरु का मुझे उचित संयोग हो, यह भी उनकी कृपा से ही होगा। अतः सतत संयोग के लिए उत्तम प्रार्थना हो। उत्तम वस्तुकी प्रार्थना भी अलभ्य, अमूल्य और अनंत उपकारक हैं। उससे हृदय नम्र होकर शुभ अध्यवसाय जाग्रत होते हैं, जिससे मिथ्यात्वादि पाप का नाश होकर मोक्षबीज की प्राप्ति होती है, जो मोक्ष पर्यन्त शुभ कर्म परंपरा जीवित व अखन्ड रखता है। मैं देव-गुरु की बहुमान पूर्वक सेवा करने लायक बनूं। सेवासे ही सेवक सेव्य की आज्ञा का पात्र बनता है। जिनाज्ञा ही शिव सुन्दरी का संकेत है। मैं ऐसी प्रतिपत्ति वाला – स्वीकार – भक्ति बहुमान और समर्पणवान बनूं। इससे उनकी आज्ञाका निरतिचार पालक बनूं। समर्पण बिना संपूर्ण स्वीकार असंभव है।

इन दो उपायों के सेवन से मैं मोक्ष तथा मोक्षमार्ग का अर्थी (संविग्न) बनकर यथा शक्ति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुकृतकी आसेवना अनुमोदना करता हूँ। त्रिकाल अनन्त तीर्थंकरों के सर्व अनुष्ठान (उत्कृष्ट कोटिके संयम, विहार, तप, परिषह व उपसर्ग सहन, ध्यान, उपदेश आदि की, सिद्धोंके सिद्धभाव (अक्षय स्थिति निष्कलक शुद्ध स्वरूप अनन्त ज्ञानादि), सभी त्रिकाल के आचार्यों के (पांचों) आचार, उपाध्यायों के सूत्र प्रदान की, सर्व साधुओं (साध्वीयों) के साधु क्रिया की (अहिंसा संयमादि, ध्यान, परीषह उपसर्ग आदि में धीरता, विनय भक्ति आदि) की मैं अनुमोदना करता हूँ।

'करण करावणने अनुमोदन सरिखां फल निपजायोरे।'

अनुमोदना हम बहुत ज्यादा कर सकते हैं, यदि वह भावपूर्ण हृदय से, गद्‌गद् कंठ व वाणीसे, संभ्रम व बहुमान सहित अनुष्ठान क्रिया आदि जीवनमें उतारने के मनोरथ के साथ की जाय तो सचमुच ही लाभप्रद होगी। अतः सर्व सुकृतों का बार बार अनुमोदन हमारे जीवन को उज्ज्वल बनाने में तथा गुणबीजाधान में मददकर्ता होगा।

इसी तरह श्रावकों के वैयावच्च, दान, तप आदि धर्म क्रियाओं की, सर्व देव तथा सर्व जीव जो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुक्ति के निकट हैं तथा शुद्ध आशय वाले हैं, उनके मार्ग (मोक्ष) साधक योगों की अनुमोदना करता हूं। मार्गानुसारिता सम्यक् दर्शनादि योग तथा श्रावक के गुण वगैरे आत्मा पर से मोह के हटने से ही प्राप्त होते हैं। अतः उन दुर्लभ और पवित्र योगों का अनुमोदन करने योग्य है और करने से हमें लाभ होता है।

अब मैं प्रणिधान शुद्धि करता हूं। प्रणिधान याने कर्तव्य का निर्णय और अभिलाषा तथा मनकी एकाग्रता। इसकी शुद्धि का यह तरीका है।

श्रेष्ठ लोकोत्तर गुणों से युक्त श्री अरिहंतादि के सामर्थ्य से मेरी यह अनुमोदना सम्यक् विधि वाली हो (ऐसी मेरी इच्छा हैं), तीव्र मिथ्यात्वादि कर्म विनाश से सम्यक् याने शुद्ध आशय वाली हो; उसमें पौद्गलिक आशंसा न हो, दंभरहित तथा विशुद्ध भाववाली हो। वह सम्यक् प्रतिपत्ति रूप (स्वीकार) तथा निरतिचार हो।

अनुमोदना को पाप प्रतिघातक व गुणबीजाधान की साधक बनाने का यहाँ क्रम बताया है। प्राप्य पुरुष की लोकोत्तर उत्तमता से प्रार्थना करने वाले

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का हृदय आर्द्र, नरम, नम्र तथा उदार बन जाता है। प्रार्थना पारस है, जो जीव को स्वर्ण का तेज अर्पित करती है। सच्ची अनुमोदना में विधिपालन शुद्ध अध्यवसाय, सम्यक् क्रिया तथा अखंड निर्दोष प्रवृत्ति होनी चाहिये। सुकृत की सच्ची अनुमोदना भी मिथ्यात्व की मंदता बिना नहीं हो सकती। अरिहंतादि का ऐसा प्रभाव है कि उनके प्रति सद्-भाव से शुभ अध्यवसाय जागकर मिथ्यात्व को मंद कर देते हैं।

इसी लिए वे अचिंत्य शक्तिशाली हैं। वे सर्वज्ञ वीतराग तथा कल्याण स्वरूप सर्व जीवों के परम कल्याण के हेतु भूत हैं। उनके गुणों को पहचानने में मैं मूढ हूँ। अनादि मोह से वासित होने से हिताहित के भान से रहित हूँ। मैं हिताहित का जानकार बनने का इच्छुक हूँ। अहितकर मिथ्या-त्वादि अविरति, कषाय व अशुभ योगों से निवृत्त बनूँ, हितकर ज्ञान दर्शनादि में प्रवृत्त बनूँ। मोक्ष मार्ग का आराधन तथा सर्व जीवों के प्रति औचित्य प्रवृत्ति सहित सुकृत जिनाज्ञा आदि का आराधक बनूँ। तीन बार का कथन तीनों काल, तीनों करण तथा त्रिविध करने रूप कथन का सूचक है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मृगने दान देने वाले की तथा बलदेव मुनी के संयम की कैसी अद्भुत अनुमोदना की कि वह भी उनके साथ ही ५ वें देवलोक में ही उत्पन्न हुआ।

इस सूत्र को सम्यक् रूपसे पढने का फल कहते हैं। कैसा अपूर्व फल ? सम्यक् रीति अर्थात् हृदयमें संवेग का प्रकाश फैलाकर अर्थात् पूर्वकथित चार शरण में अरिहंतादि के कहे विशेषणों के प्रति हृदयपूर्वक श्रद्धा व आदर, दुष्कृत गर्हा में हृदय में से दुष्कृत रूपी शल्य को हटाकर अपने दोषों के प्रति सच्चा दुगंछा भाव, अहो मैं कैसा अधम ? कितना दुष्कृत किया ? तथा सुकृत अनुमोदना में असल क्रिया पर्यंत आत्मा को ले जानी वाली प्रार्थना हो। अरिहंतादि के सामर्थ्य, प्रभाव की श्रद्धा तथा अनन्तकाल बाद ये तीन उपाय मिले, उसके लिए अपने आपको धन्य माने।

इस सूत्रको पढ़ने सुनने तथा अनुप्रेक्षासे कर्म की स्थिति व दलिक कम होते हैं और उनके सर्व अनुबंध मन्द पडते हैं। यह सूत्र महामंत्र महाऔषधि व परम रसायत समान है, जिसके पठन, मनन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व निदिध्यासन से अशुभ अनुबन्ध क्षीण होकर संसार प्रवाह सूख जाता है ।

पंच सूत्र से उल्लसित शुभ अध्यवसायोंसे अनुबन्ध का जहर दूर होकर अशुभ विपाक परंपरा का उनमें सामर्थ्य नहीं रहता । कटकबन्धको* तरह अल्प फलवाले तथा अपुनर्बन्ध अवस्थावाले होते हैं ।

उपरोक्त फल नुकसान के निवारण रूप कहा। अब सम्यक् उपायों के सिद्धि स्वरूप फल का कथन करते है ।

इस सूत्र तथा उसके अर्थका पठन, मनन आदि शुभकर्म तथा उनके अनुबन्धों को आकर्षित करता है, शुभ भाव वृद्धि से वे पुष्ट होते हैं तथा परा-काष्टा पर पहुँचते हैं। पंचसूत्र की कितनी महिमा! वह सानुबन्ध शुभकर्म भी उत्कृष्ट होता है। जैसे अच्छे औषध टोनिक से तुष्टि पुष्टि प्राप्त होती है । पुनः नये शुभ कर्म बँधवाकर परंपरा से निर्वाण के परम सुख का साधन बनता है ।

---

* सांप या बिच्छू के काटने पर उससे ऊपर के भागमें कपडा या रस्सी कस कर बांधे जाते हैं उससे जहर का फैलना कम होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुन्दर प्रणिधान पूवक सम्यक् रीत से – प्रशांत चित्तसे – पढें, सुनें तथा सूत्र व अर्थका मनन चिंतन करें ।

सूत्रकार अन्तिम मंगल कहते हैं । देवेन्द्र गणधरों से वन्दित परम गुरु वीतराग को मैं नमस्कार करता हूँ । अन्य नमस्कार योग्य गुणाधिक आचार्य आदि को नमस्कार हो । सर्वज्ञ का शासन जयवंत हो । प्राणी वरबोधि लाभ प्राप्त करके सुखी हो, सुखी हों, सुखी हों ।

इस तरह पंचसूत्र के पाप प्रतिघात गुणबीजाधान नामक प्रथम सूत्र का संक्षिप्त विवेचन पूर्ण हुआ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

❀ साधुधर्म परिभावना ❀

(अब इसी सुन्दर पंचसूत्र के दूसरे सूत्र साधुधर्म परिभावना का प्रारंभ होता है। श्रावक गुणबीजाधान करके साधुधर्म की परिभावना करे। मोक्ष की तरफ गमन करने की पूर्वोक्त पांच बातों में से यह दूसरी है। यहाँ मूल सूत्र तथा उसका अर्थ व विवेचन दिये जाते हैं।)

जायाए धम्मगुणपड़िवत्तिसद्धाए, भाविज्जा एएसिं सरूवं, पयइसुंदरत्तं, अणुगामित्तं, परोवयारित्तं, परमत्थहेउत्तं।

मिथ्यात्वादि कर्मों के क्षयोपशम से धर्मगुण प्राप्ति का भाव (इच्छा) प्रकट होने पर धर्म गुणों के स्वरूप का चिंतन करें। ये अनन्त कालके संक्लिष्ट परिणाम को विशुद्ध बनाने वाले होने से कितने स्वाभाविक रूपसे सुन्दर हैं, अनुसरण करने लायक हैं, परोपकारी है और परंपरा से मोक्ष साधक होने से परमार्थ के हेतु हैं।

शीघ्र ही मोक्ष प्राप्ति के लिए साधुधर्म अत्यन्त आवश्यक है। अतः उसके प्राथमिक अभ्यास के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिए श्रावक के देशविरति आदि व्रत जरुरी हैं। अहिंसा सत्य आदि पवित्र भाव होने से नैसर्गिक सुन्दर हैं, संस्कार रूपसे आत्मा में रहकर परलोक में साथ आनेवाले हैं। हिंसा आदि दूसरों के कष्ट को रोकने वाले तथा स्वात्मा के हितकर होने से परोपकारी हैं। अतः इन धर्मगुणों की सुन्दर भावना से हृदय को भावित करें।

तहा दुरणुचरत्तं, भंगे दारुणत्तं, महामोहजणगत्तं एवं दुल्लहत्तं ति।

ये गुण बडी जिम्मेदारी वाले महा कीमती हैं प्रतिज्ञापूर्वक स्वीकार के बाद उनका भंग भयंकर है। प्रभुकी आज्ञा भंग का दोष लगता है। भंग से महामोह उत्पन्न होता है। इससे भवांतर में उनकी प्राप्ति दुर्लभ बनती है। गुणोंको स्वीकार करने के बाद दुर्गुणों का आदर करने से भवांतर में वे ही सुलभ बनेंगे न ?

एवंजहासत्तीए उचिअविहाणेणं, अच्चंत भावसारं पडिवज्जिज्जा। तंजहा-थूलग पाणाइवायविरमणं, थूलगमूसावायविरमणं, थूलग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अदत्तादान विरमणं, थूलगमेहुणविरमणं, थूलग-परिग्गहविरमणमिच्चाइ ।

यथाशक्ति उचित विधिसे अत्यन्त भावपूर्वक बलवान प्रणिधान से धर्मगुणों का स्वीकार करें। शक्ति से कम नहीं या ज्यादा नहीं, शक्ति छिपाये बिना ऐसा करें। बिना सोचे विचारे कूद पडना भी अच्छा नहीं। निरपराधी त्रस जीवको निरपेक्ष रूप से मारना नहीं। जूठका त्याग, चोरी न करना, मैथुन की विरति, परस्त्री का त्याग तथा स्वस्त्री से संतोष। धन इत्यादि परिग्रह का प्रमाण करना। इन पांच मूल व्रतों के साथ तीन गुणव्रत (दिशि परिमाण, भोगोपभोग परिमाण तथा अनर्थ दंड विरमण) और चार शिक्षा व्रत (सामायिक, देशावगाशिक, पौषध व अतिथि संविभाग) मिलकर श्रावक के बारह व्रत हुए।

जीवकी उन्नति का शास्त्र में यही क्रम कहा हैं। पहले समकित की प्राप्ति, बादमें देशविरति और तब सर्व विरति। इस के लिए आत्मामें कषायों की मंदता और भावोंकी विशुद्धि उत्तरोत्तर होती रहनी चाहिये। मार्गानुसारी के गुणों से इनकी ज्यादा पुष्टि होती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पडिवज्जिऊण पालणे जइज्जा, सयाणागाहगे सिआ, सयाणाभावगे सिआ, सयाणापरतंते सिआ।

ये धर्मगुण रत्न की पेटी या महामंत्र के समान हैं। अतः उनका पालन व रक्षा प्रयत्नसहित, कष्ट उठाकर भी करना चाहिये। अनन्तकाल बाद मिले होने से तथा थोड़े प्रयत्न से (इस भवके) भविष्य के अनन्त काल के लिए लाभकारक होंगे। सांसारिक कार्य व लक्ष्मी के लिए जो प्रयत्न होता है, उससे भी अत्यन्त ज्यादा आत्माके सच्चे रत्न समान गुणों की प्राप्ति व रक्षा के लिए आवश्यक है।

पालन की विधिमें जिनाज्ञा के ग्राहक, भावक तथा परतंत्र बनें। जिनाज्ञा क्या है उसे जानने के लिए उसका अध्ययन श्रवण करना और उसके चिंतक बनकर आज्ञा से आत्मा को भावित करना अर्थात् ओतप्रोत हो जाना चाहिये। इससे जगत की वस्तुओं के परतंत्र बनने के बजाय अधिकाधिक जिनाज्ञा के परतंत्र अर्थात् जो कुछ वह आज्ञा कहे वैसा ही करने वाले बन जायँ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आणाहि मोहविसपरममंतो, जलं रोसाइजलणस्स, कम्मवाहितिगिच्छासत्थं, कप्पपायवो सिवफलस्स ।

जिनाज्ञा मोह विषको उतारने वाला परम मंत्र है । इसीलिए इसके ग्राहक, भावक व परतंत्र बनें ! आज्ञा से मोह की भयानकता, आत्मा की हानि आत्महित साधन के समय की बरबादी आदि का पता चलता है । आज्ञा तो द्वेष अरति शोक आदि की अग्नि को बुझानेवाला पानी है । इससे हृदयमें उपशम तथा कषायमंदता के सुन्दर मेघ बरसते हैं । कर्मरूपी अनेक कष्टों को मिटाकर आज्ञा मोक्ष फल देनेवाला कल्पवृक्ष है । विरति के बाद भी बची वस्तु में रस रह जानेसे आज्ञा उसे हटा सकेगी । साधक तत्त्वों का अभ्यासी व ज्ञाता बने, तो वह हेयोपादेय का ज्ञान प्राप्त करेगा । सावद्यकार्य आत्म हितके घातक ही लगेंगे । आगम व आज्ञा कर्म व्याधि दूर करने का चिकित्साशास्त्र है । जीव अनादि काल की उलटी प्रवृत्ति में लगा है, उसे आज्ञा ही मिटा सकती है । जिनाज्ञा कस्तूरीसे आत्मा की उलटी प्रवृत्तिरूप बदबू नष्ट हो जाती है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वज्जिज्जा अधम्ममित्तजोगं । चिंतिज्जा-ऽभिणव पाविएगुणे, अणाइभवसंगए अ अगुणे, उदग्गसहकारित्तं अधम्ममित्ताणं, उभयलोग-गरहिअत्तं, असुहजोगपरंपरं च ।

अकल्याण मित्र (आत्मा के हित का शत्रु) का त्याग करना उचित है । सगे संबन्धी मित्र परिवार जो भी संसारमें डुबावे. वे सभी अकल्याण मित्र हैं । सारा संसार ही ऐसा है । अतः उसे शीघ्र छोडें, पर वह न बने तब तक उनको कल्याणमित्र बनाने का प्रयत्न करें । अहिंसादि गुण आत्मा के हितकारक हैं । ऐसा उन्हें भी समझाना । गुण तो नये प्राप्त हुए हैं, अतः उनका खूब सिंचन करो । अगुण या दोष अनादि कालसे आत्मा में लगे हैं, अतः उन्हें भूलने या उनसे छूटने का प्रयत्न करो। इसके लिए मानव भव से अच्छा अवसर कभी नहीं मिलेगा ।

अकल्याणमित्र परलोक चिंतासे रहित होते हैं। उन्हें इस भव या भवांतर में वास्तविक शुभ हित या शांति क्या है व किसमें है, उसका विचार नहीं होता । अतः उनका त्याग करें । अशुभ परंपरा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाले पदार्थों की वे सलाह देंगे अर्थात् सांसारिक कार्य बढ़ाने की ही सलाह देंगे । ये कार्य दोनों लोक के लिए निंद्य तथा अशुभ कर्मों के अनुबंध कराने वाले तथा पाप व्यापारों की परंपरा चलाने वाले हैं ।

संक्षेप में पांच कर्तव्य ये हैं :- १. धर्म गुणों के स्वरूप की विचारणा २. गुणों का स्वीकार ३. आज्ञा का अभ्यास व आधीनता ४. अकल्याण मित्रों का त्याग ५. लोक विरुद्ध का त्याग ।

परिहरिज्जा सम्मंलोगविरुद्धे, करुणापरेज-णाणं न खिंसाविज्ज धम्मं, संकिलेसो खु एसा, परम बोहिबीअम् अबोहिफलमप्पणोत्ति ।

सत्य अहिंसा आदि नये गुणों तथा अनादि दुर्गुणों के स्वरूप का पूरा ख्याल होना चाहिये । साथ ही साथ व्यसन निंदा चुगली आदि इस लोक तथा परलोक विरुद्ध कार्यों को छोडना चाहिये । अन्यों को अशुभ अध्यवसाय (चित्तसंक्लेश) करवाने वाला व्यवहार भी छोड देना चाहिये । अन्यों पर इतनी दया हो कि उसके कार्य से अन्यों को

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधर्म न हो। उदा० पूजा करने जाय, तब कोई निंदा करे, उसकी परवाह नहीं। पर पूजा करने जाते समय कोई अनुचित कार्य किया, गाली दी या हिंसक व्यापार की अनुमति आदि से लोगों को धर्म पर जो अभाव उत्पन्न हो, वह अनुचित प्रवृत्ति से उत्पन्न कहा जायगा। या धर्म कार्य में काफी खर्च करने पर भी सामान्य कार्य में थोडा खर्च करने में आनाकानी करे तो उसे लोग 'धर्मंदभी' कहेंगे। लोगों को धर्म के प्रति अरुचि उत्पन्न हो उसकी दया श्रावक ही करेगा न ? अन्य कौन ?

दूसरे को धर्म सिखाने या उपदेश करने का कार्य है वह तो दूर रहा, पर उसके कार्य से धर्म के प्रति सद्भाव खोने या अनादर से उसे धर्म के प्रति अरुचि उत्पन्न होने से वह दुर्लभबोधि बने, वैसा कार्य श्रावक कैसे कर सकता है ? लोगों को अबोधि का कारण होने से स्वयं को भवांतर में बोधिबीज दुर्लभ बनता है।

एवमालोएज्जा, न खलु इत्तो परो अणत्थो, अंधत्तमेअं संसाराडवीए जणगमणिट्ठावायाणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अइदारुणं सरूवेणं, असुहाणुबंधमच्चत्थं। सेविज्ज धम्ममित्तो विहाणेणं।

अकल्याण मित्र को छोडकर कल्याण मित्रका विधान पूर्वक संग करें। 'तुम ही कल्याण में सहायक हो,' ऐसे स्वीकार तथा आदर सहित मनमें ऐसे विश्वास सहित उनका संग करें। दो पैसे का लाभ करवाने वाले का उपकार मानेगा, पर धर्म के प्रति आकर्षण करने वाले की कोई कीमत नहीं लगती। इसीलिए सत्संग का फल नहीं मिलता। मुनिपुंगव या गुणप्रेरक गृहस्थ जो आत्म कल्याण में सहायक हो वह कल्याण मित्र। उनका संग व सेवा कैसे करना चाहिये ?

अंधो विवाणूकट्ठए वाहिए विव विज्जे दरिद्दो विव ईसरे, भीओ विव महानायगे। न इओ सुंदरतरमन्नंति बहुमाणजुत्तो सिआ, आणाकंखी आणापडिच्छगे, आणाअविराहगे, आणानिप्फायगेत्ति।

कोई अंध भयानक जंगल में फँस जाय। पशुओं आदि के भय में रास्ता न मिले, तब कोई बचावे तो कैसा ? धर्ममित्र भी भयानक भवाटवी में से

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आत्महित के मार्ग पर ले जाने वाले हैं। महारोगसे पीडित हो, बेचैनी हो तथा मृत्यु से बचने की इच्छा हो, उस समय कोई अच्छा वैद्य रोग मिटावे तो कैसा लगे ? अथवा कोई निर्धन हो, फिर सजा मिली हो, कोई सहायक न हो, उसे कोई मदद करे तो वह उस श्रीमंतकी कैसी सेवा करेगा ? इस तरह कल्याण मित्र को ढूंढकर उसकी सेवा करें।

महा भयस्थानक में, आक्रमण के समय, किसी जुल्मखोर के जुल्मों से बचने के लिए या आश्रय के लिए किसीको ढूँढने पर कोई योद्धा मिल जाय, तो उसे किस तरह, कितने उल्लास से, कैसे बहुमानव कैसी परतंत्रता से उसकी सेवा करना चाहेगा ? इस तरह कल्याणमित्र की सेवा करें।

इस जगतमें कल्याणमित्र की सेवा से अधिक सुन्दर क्या है ? उसकी उपासना ही सुन्दर है। अतः उसके प्रति खूब आदर रखें, उसके कृपाकांक्षी बनें। आज्ञा मिलने पर उसका हृदयपूर्वक स्वीकार हो। जैसे भिखारी को बहुत भटकने पर भी कुछ न मिले, अत्यन्त भूखा हो, बहुत देर हुई हो तब कुछ मिले तो उसे कैसे ग्रहण करता है ? आज्ञा की विराधना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न हो अर्थात् विरुद्ध आचरण न हो। फिर उसका उचित अमल करना चाहिये। अतः अरुचि से नहीं पर धन्य समझ कर बहुमान पूर्वक। इससे पुराने कुसंस्कार मिटकर सुसंस्कार की वृद्धि होकर उनको परंपरा प्राप्त होती है। कुप्रवृत्तियां मिटकर सुप्रवृत्तियों से जीवन भर जाता है।

पडिवन्नधम्मगुणारिहं च वट्टिज्जा गिहिसमुचिएसु गिहिसमाचरेसु परिसुद्धाणुट्ठाणे, परिसुद्धमणकिरिए, परिसुद्धवइकिरिए, परिसुद्धकायकिरिए।

कल्याणमित्र ही सेवा योग्य हैं यह निश्चय किया। उनकी आज्ञा के परतंत्र बने। इससे अनादि स्वेच्छाचारिता द्वारा उत्पन्न कर्म की पराधीनता मिटकर उससे स्वतंत्र होने के द्वार खुल गये। अब मोह की यह ताकत नहीं कि वह खींच सके।

धर्मगुणों के समर्थक सेवादि के साथ धर्मगुणों के अनुसार, उन्हें शोभा दे, वैसा व्यवहार–मनवचन काया का–होना चाहिये। जीवन भी कषाय व शल्य रहित बनना चाहिये। वाणीमें असत्य, आक्षेप

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्कशता आदि न हों। काया से अंगोपांग की चेष्टा बीभत्सता, क्रूरता उद्भट वेश आदि रहित तथा मनकी विचारधारा भी पवित्र व शुद्ध हो।

वज्जिज्जाणेगोवघायकारगं, गरहणिज्जं बहुकिलेसं, आयइविराहगं, समारंभं। न चिंतिज्जा परपीडं। न भाविज्जा दीणयं। न गच्छिज्जा हरिसं। न सेविज्जा वितहाभिनिवेसं। उचियमणपवत्तगे सिआ। न भासिज्जा अलिअं न फरुसं, न पेसुन्नं, नाणिबद्धं। हिअमिअभासगे सिआ।

उपरोक्त सामान्य बात हुई। अब विशेष अनुष्ठान कहते हैं। प्रथम मानसिक – जिसे साधुधर्म की याने महा अहिंसा, महासंयम की परिभावना करना है वह (१) संसार की हिंसा के आरंभसमारंभ के संकल्प न करे, लोकनिंद्य कार्य, कर्मादान, जुआ आदि न करे। (२) पर को जरा भी पीडा का विचार भी न करे (क्योंकि परपीडा स्वयं को ही पीडाकारी है।) शत्रु परभी मैत्रीभाव रखे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोई अनिष्ट हो या इष्ट न हो तो (३) दीनता न करे। मन न बिगाड़े। (४) इष्ट प्राप्ति पर हर्ष का अतिरेक न हो। प्राप्त वस्तु जड है, विनश्वर है, रागांध बनाकर संसार वृद्धि का कारण है, ऐसा समझे। (५) बुरा आग्रह-कदाग्रह न करे। अतत्त्व में मन न रोके तथा (६) अतत्त्व में से मन उठाकर आगम अनुसार उचित तात्त्विक बात या वस्तु में मन लगावे।

अच्छा कार्य करे, पर मन बिगाडे, गलत बातें सोचे, न मिल सकने लायक चीजों की इच्छा किय करे, अनर्थ दंड के विचार करे या उचित व्यवहार करे या दान शील करे पर मन बिगाड़े तो यह सब अनुचित है। केवल मन बिगाड़ने से तंदुलमत्स्य सातवीं नरकमें जाता है।

अब वचन से - असत्य या पीडाकारी न बोले, झूठे आक्षेप न करे। खूब पुण्य से प्राप्त जीभ से असत्य या अभ्याख्यान के कोयले क्यों चबाये? देव या पूर्व महर्षियों के गुणगान में इसे क्यों न लगावें? वचन कठोर न होकर मृदु हो। विकथा न करे, निंदा कुथली में न पडे। जो बोले वह हितकर तथा मित - प्रमाण युक्त हो।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवं न हिंसिज्जा भू आणि। न गिण्हिज्ज अदत्तं। न निरिक्खिज्ज परदारं। न कुज्जा अणत्थदंडं। सुहकायजोगे सिआ। तदा लाहोचिअदाणे, लाहोचिअ भोगे, लाहोचिअ परिवारे, लाहोचिअनिहिकरेसिआ।

तीसरी कायिक क्रिया–काया से पृथ्वी, पानी आदि की हिंसा न करे। जरा भी चोरी न करे। परस्त्री तरफ़ नजर न करे। दुर्ध्यान आचरण, नाटक देखना, अधिकरण (हिंसक शस्त्र आदि) बढाना, मौज शौक आदि अनर्थ दंड का सेवन न करे। जिनागम कथित शुभ प्रवृत्ति – शील, दान, तप, सामायिक, पौषध, ज्ञान ध्यानमें–काया से लग जावे।

आय (आवक) को योग्य ढंग से लगावे। पूर्व महर्षियोंने बताया है कि आय का आठवां भाग दानमें, आठवा स्वयं के उपयोगमें, चौथा परिवार के पोषणमें, चौथा पूंजीमें और चौथा भाग व्यापार में लगावे। अथवा अन्य विधिवत योग्य व्यवस्था करे। लाभ का उचित भाग दान में, उचित भाग भोग में, उचित भाग परिवार के लिए तथा उचित भाग संग्रह करने में लगावे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असंतावगे परिवारस्स, गुणकरे जहासत्ति, अणुकंपापरे निम्ममे भावेणं । एवं खु तप्पालणे वि धम्मो, जह अन्नपालणे त्ति, सव्वे जीवा पुढो पुढो, ममत्तं बंधकारणं ।

पूर्वकथित गुण तथा सदाचार से समृद्ध आत्मा परिवार को संताप (दुःख) देनेवाला नहीं होता । निरंतर शुभ भावोंमें पवित्र निर्णय व सुन्दर इच्छाओं वाला होने से स्वार्थी न होकर परमार्थी होगा, अकडू व क्रोधी न होकर मृदु व शांत होगा, तुच्छ विचार या अदूरदर्शी न होकर दीर्घदर्शी, गभीर व उदार होगा । परिवार को पीडा न दे, इतना ही नहीं पर उसे संसारका स्वरूप, उसकी स्थिति व जीवकी मोह दशा आदि बताकर धर्ममार्ग में प्रेरित करे । उनके न समझने पर भी उनके प्रति दयालु, शुद्ध करुणा भाव व वात्सल्य वाला हो, अपना उपकार न जताये तथा द्वेष का संग ही न आने दे ।

परिवार के प्रति अनुकंपा के साथ ममत्व भाव रहित हो । भवस्थिति, अनित्यता, अनन्त भवों के परिवार आदि के विचार से ममत्व छोड कर दया भावसे मोह रहित उनका पालन करे, तो जैसे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूसरों के पालन में धर्म है, वैसे कुटुंब पालन भी धर्म बन जाता है। मोह तथा आरंभ का पोषण पाप है, पर उपरोक्त भावों से पालन धर्म बनता है; जैसे अन्य दीन दुखी का पालन। पर उन पर ममत्व ही बंध का कारण है। लोभ ही कषाय-स्वार्थ स्वरूप है, राग है।

ममता ही समता की शत्रु है, सुख की शत्रु है। समुद्र के पानी की तरंग से जैसे कुछ मछली इकट्ठी हो गई व दूसरी जोरदार तरंग से अलग हो गई, वैसे ही कर्म की तरंगों से कुटुंब मिला है व बिछुड जायगा। मेरा तेरा क्या ? बुद्धि के इस भव में ही ममता को तोड। कोई 'स्वजन' आत्मा का नहीं। धर्म समझाने का प्रयत्न करे, पर न समझे तो उनकी तीव्र मोहदशा समझकर अनुकंपा वाला बना रहे।

कुटुंब पालन में उन पर उपकार हो रहा है, संताप (पीडा) किये बिना गुण करता है, आर्तध्यान व रौद्र ध्यान से बचाने का उपकार है। ममत्व ही मिथ्या भाव तथा बंध का कारण है। अतः अन्तर से न्यारा-भिन्न रहे।

समकित दृष्टि जीवडा, करे कुटुंब प्रतिपाल।
अन्तरगत न्यारा रहे, ज्यों धाइ खेलावत बाल॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तहा तेसु तेसु समायारेसु सइसमण्णागए सिआ, अमुगेहं, अमुगकुले, अमुगसिस्से, अमुग-धम्मट्ठाणट्ठिए। न मे तव्विराहणा, न मे तदारंभो वुड्ढो ममेअस्स, एअमित्थ सारं, एअमायभूअं, एअं हिअं, असारमण्णं सव्वं, विसेसओ अविहि-गहणेणं ।

ममत्व रहित, अनुकम्पावाला गृहस्थ योग्य आचारों का सेवन करते हुए भी उपयोग सहित रहकर सोचता रहे: मैं कौन हूं, मेरा कुल कौनसा है, मैं किसका शिष्य हूं? कौन से धर्मस्थान में हूं (क्या व्रत नियम हैं) आदि पर हर समय विचार करता रहे। उनकी विराधना न हो। धर्म की, व्रतों की वृद्धि होती रहती है या नहीं? व्रत व उनकी भावना के साथ जैसे श्वेत वस्त्र पर दाग न लगे, वैसी सावधानी रखनी चाहिये। रागद्वेष के जोर से शिथिलता या प्रमाद न आवे, अतः विराधना से बचने का ध्यान रखें। जग में समकित या व्रत के सिवाय कुछ भी सार नहीं है। वही हित है, भवांतर में वही साथ आनेवाली संपत्ति है। अन्य सभी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सांसारिक चीजें दगाखोर हैं। अविधि अन्याय से प्राप्त वस्तु कटुफल विपाकी है।

अनीति से प्राप्त संपत्ति तथा भोग बडिशामिश की तरह आत्मा का नाश करते हैं। मच्छीमार मछली को पकडने के लिए पानी में जो कांटा डालता है, उस पर मांस का टुकडा लगाता है, उसे बड़िशामिष कहते है। मछली उसे खाते ही कांटा उसके मुँहमें फंस जाता है और वह पकड ली जाती है, मर जाती है। उसी तरह अनीति प्राप्त संपत्ति में अनीति के चिकने कर्म आत्मा को पकड लेते हैं और उसे निस्तेज, मलिन, व अशक्त बना देते हैं।

एवमाह तिलोगबंधू परमकारुणिगे सम्मं संबुद्धे भगवं अरिहंतेत्ति। एवं समालोचिअ, तदविरुद्धेसु समायारेसु सम्मं वट्टिज्जा, भाव-मंगलमेअं तन्निप्फत्तीए।

ऐसी बातें तथा आत्मा को सुन्दर व सुखी बनाने का मार्ग कौन बताता हैं? भगवंत अरिहंत जो तीन लोक के बंधु व सच्चे स्नेही हैं, परम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारुणिक हैं, श्रेष्ठ बोधि (वर बोधि) वाले, स्वयं ही संबुद्ध हैं, जड चेतन के बोध वाले महा विरागी हैं, वे यह समझाते हैं। यह सोच कर धर्मस्थान (समकित, देशविरति) के विरुद्ध या प्रतिकूल नहीं, पर विविध आचारों में अच्छी तरह शास्त्र नियमानुसार प्रवृत्त हों।

इस तरह का विधिपूर्वक धर्म वर्तन ही भाव मंगल है। अहिंसा, सत्य आदि उत्तम आचार में सविधि प्रवर्तन भाव मंगल है। यह अशुभ भावों का नाश करता है, शुभ अध्यवसाय के सुन्दर परिणाम वाला होता है,। अतः यह भाव मंगल है। आगम ग्रहण, धर्म मित्र उपासना, लोक विरुद्ध का त्याग, शुद्ध मन वचन, काया की क्रिया आदि न करे तो शुभ अध्यवसाय दुर्लभ हैं। धर्म करे तब भी क्लेश आदि से मन में आर्त्त रौद्र ध्यान रह सकता है, तो उत्तम आचार से भी हृदय को शांति कैसे मिले ? धर्म व्यवहार में जितनी शुद्धि उतना ही धर्मस्थान ऊंचा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तहा जागरिज्ज धम्मजागरिआए। को मम कालो ! किमेअस्स उचिअं।

वह (श्रावक–साधुधर्म परिभावना करनेवाला) सदा धर्म जागरिका करे। किस तरह ? भाव निद्रा का त्याग करके। भाव निद्रा याने अतत्त्वचिंतन, रागद्वेष का खेल, मिथ्यात्व, बाह्यभाव प्रमाद आदि। इसको छोडते हुए सतत धर्म जाग्रति अर्थात् तत्त्व विचारणा–तत्त्व क्या है? आत्मा क्या है ? मैं कौन हूं तथा 'स्व' का असली स्वरूप जानने का प्रयत्न करें। मानव जीवन रत्नोपम है, उसमें जो शेष रहा है उसका महामूल्य उपजाने का प्रयत्न, विशिष्ट जीवन में महा उचित की प्राप्ति तथा जडमुखी से आत्म-मुखी प्रवृत्ति करने के लिए तथा जन्म जरा मृत्यु की जंजाल से छूटने के लिए और कर्मव्याधि को मिटाने के लिए धर्म औषधि का सेवन करें।

कैसा समय है ? क्या उचित है ? महा मूल्यवान समय। उसमें उचित कर्तव्य क्या है ? अनन्त शरीर परिवर्तन जो पूर्व में किये हैं, वे पुनः न करना पड़े वैसी स्थिति उत्पन्न करो– ऐसा समय है यही उचित

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है। अज्ञान व मोह से मैं इसे कम कर रहा हूं या बढ़ा रहा हूं। अखबार, रेडियो, उनसे बाजार भाव, सिनेमा गीत आदि में मन को डाल कर क्या किया ? कर्म रूपी महान पर्वत जैसे ढेर को तोडने का यही समय मिला है। हे जीव सोच जरा !

आहार, निद्रा, भय, परिग्रह नामक चार महा संज्ञा का आत्मा पर जो नशा चढा है, वह उतारने का यही मौका है – खाना, सोना, इकट्ठा करना आदि को हटाने वाले गुण तप, शील, दान आदि की प्रवृत्ति से उन्हें हटा दे, कम कर दें। देव भव या अन्य किसी भव में इनको तोडने का समय कहाँ, बद्धि कहाँ ? संग्रहवृत्ति आकाश जितनी अनन्त है। इसे तोडो। आहार, विषय व परिग्रह की ममता करते यह सोचा कि यह दुश्मन कहां घरमें डाल रहा हूँ। धर्म साधना के शरीर को टिकाना है, पर आहार संज्ञा को दबा कर, मार कर। जैसे बिच्छु को डंक बचाकर पकडना।

को कालः ? किं उचिअं ? कैसा काल–वीतराग शासन के नाव में बैठकर भव पार उतरने का। तिर्यंच आदि में कितना कष्ट ? 'जो आवे, समता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से भोगो। कर्म कटते हैं।' ऐसा कभी कहीं किसीने समझाया ? क्या उचित है-यही। आज संयम का विराग का, उपशम का समय है। मायारूपी शल्य को काट कर फेंक दे। निदानरूपी शल्य को तोड कर हटा दे। रस, ऋद्धि तथा शातारूपी गारव पर से नीचे उतर। जैसे शिलाजीत से चिपक कर बंदर वहीं मर जाता है. वैसे इन तीनों से चिपक कर जीव अनेकशः जन्ममरण से दुःखी होता है। देव व चक्री की रस व ऋद्धि के आगे हमें मिला किस गिनती में ? फिर भी उससे प्रेम ? तृप्ति कहां ?

संज्ञा, कषाय दुर्ध्यान व विकथा की चार चंडाल चौकड़ी को खतम करने का यही उचित अवसर है। इन से मन बिगडता है, पाप बढता है, भव व संसार की वृद्धि होती है। अतः रोकने का यह अवसर मिला है। विषयों से विरागी बनकर सर्व विरति प्राप्त करने का उचित समय है। अन्यथा क्षपक श्रेणी, सर्वज्ञता व मोक्ष कैसे मिलेंगे ? ऐसे अमृत काल को विषयों की गुलामो से विष काल कर रहा हूँ। अतः जीव जरा सोच !

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असारा विसया, निअमगमिणो, विरसावसाणा। भीसणोमच्चू, सव्वाभावकारी,अविन्नायागमणो, अणिवारणिज्जो, पुणोपुणोणुबंधी ।

विजय असार है। निश्चय ही जानेवाले, नाशवंत हैं तथा अन्तमें विरस याने कटु विपाकी हैं। विषय जड तथा नाशवंत हो न पर भी आत्मा को विकृत दुर्खः व पराधीन करते हैं। अतः वे आत्मा की ऋद्धि के समक्ष तुच्छ हैं। परिणाम में भयंकर दुःखदायक हैं।

मृत्यु अवश्यभावी तथा भयंकर हैं, सर्व वस्तु का अभाव करने वाली हैं। यहां का सब यहीं पडा रह जायगा। वह अचानक ही आती है। वह अनिवार्य है। तथा उसकी पुनःपुनः आवृत्ति होती रहती है। राग द्वेष तथा योगों की प्रवृत्ति हैं, तब तक जन्म भी है और मृत्यु भी, अनेक योनि व सब गति में – बारबार। अतः प्रबल शुभ भाव से अज्ञान व मोह को तोड़ दे, तो यह दुःख सर्वथा मिट जायगा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धम्मो एअस्स ओसहं, एगंतविसुद्धो, महापुरिससेविओ, सव्वहिअकारो, निरइआरो परमाणंदहेऊ ।

इस मृत्यु के रोग को हटाने का औषध धर्म है। वह एकांत (सर्वथा) निर्मल हो, शास्त्रोक्त परम निवृत्ति रूप हो। तीर्थंकर चक्रवर्ती आदि महापुरुषों द्वारा सेवित है। मैत्री करुणादि सहित होने से स्व पर सर्व का हितकर है और उसका निरतिचार विशुद्ध पालन परम सुख (मोक्ष) दायी है।

नमो इमस्स धम्मस्स । नमो एअधम्मपगासगाणं । नमो एअधम्मपालगाणं । नमो एअधम्मपरूवगाणं । नमो एअधम्मपवज्जगाणं ।

ऐसे उपरोक्त धर्म को नमस्कार करता हूं। उस धर्म के प्रकाशक अरिहंत को नमस्कार करता हूं। उसे हृदय में उतार कर पालने वाले साधु आदि को मैं नमस्कार करता हूँ। इस धर्म के प्ररूपक उपदेशक आचार्यों को नमस्कार तथा इस धर्म को मोक्षदायक, मोक्षका हेतु तथा सत्य धर्म के रूप में स्वीकार करने वाले श्रावकों को भी नमस्कार करता हूँ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इच्छामि अहमिणं धम्मं पडिवज्जित्तए सम्मं मणवयणकायजोगेहिं। होउ ममेअं कल्लाणं परम-कल्लाणाणं जिणाणमणुभावओ।

मैं इस धर्म को प्राप्ति की इच्छा करता हूं। अब मुझे इस धर्म का पक्षपात है। मन वचन काया के सम्यक् योगों से उसका संपूर्ण स्वीकार करता हूं। मुझे इस धर्म प्राप्ति का कल्याण प्राप्त हो। मेरा तो सामर्थ्य कुछ नहीं है, अतः परम कल्याण-कारी जिनेश्वर देवों के परम प्रभाव (प्रसाद) से वह मुझे प्राप्त हो, ऐसी इच्छा करता हूं।

सुप्पणिहाणमेवं चिंतिज्जा पुणो पुणो। एअधम्मजुत्ताणमववायकारी सिआ। पहाणं मोहच्छेअणमेअं।

इस तरह खूब एकाग्रता तथा विशुद्धता से बार बार इसका चिंतन करें, मनमें उसकी भावना करें। इस धर्म का सेवन करने वाले मुनियों का आज्ञांकित विनयी व सेवक बनूं, वैसी तीव्र भावना करें। यह मुनियों की आज्ञा कारिता मोह का छेद करनेवाली है.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसका श्रेष्ठ उपाय है। यही मोहच्छेदक संयम योग तथा संयम के विशुद्ध अध्यवसाय की जनक है।

एवं विसुज्झमाणे भावणाए कम्मापगमेणं उवेगइएअस्स जुग्गयं। तहा संसार विरत्तो संविग्गो भवइ, अममे अपरोवतावो, विसुद्धे विसुद्धमाण भावे॥

इतिसाहुधम्मपरिभावणासुत्तं सम्मत्तं॥२॥

इस प्रकार विशुद्ध भावना करता हुआ श्रावक कर्म के अनेक बंधन तोड डालता है और उस कर्म नाश से साधुधर्म को योग्यता प्राप्त करता है। इस तरह के सोच विचार व चिंतन से संसार से विरागी बनकर मात्र मोक्ष का इच्छुक बनता है। अब संसार की किसी वस्तु से उसे ममत्व नहीं है। वह परपरिताप (पर पीडक) से दूर हो जाता है। सर्व के प्रति अनुकंपा वाला वह रागद्वेष के ग्रन्थि भेद से शुभ अध्यवसायों की वृद्धि से अधिकाधिक विशुद्ध बनता जाता है।

इस तरह साधु धर्म परिभावना नामक द्वितीय सूत्र समाप्त हुआ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

: समाधि विचार :

(आत्मा की उन्नति के लिए प्रथम दो सूत्रों की तरह ही यह भी अत्यंत उपयोगी है। इसे बारबार पढ़कर आत्मा को उसके शुद्ध स्वरूप से भावित करें।)

परमानंद परम प्रभु, प्रणमुं पास जिणद;
वंदूं वीर आदे सहू, चउवीसे जिनचंद ।।१।।

इंद्रभूति आदे नमूं, गणधर मुनिपरिवार ।
जिन वाणी हैड़े धरी, गुणवंत गुरु नमुं सार ।।२।।

आ संसार असारमां, भमतां काल अनन्त;
असमाधे करी आतमा, किमहि न पाम्यो अंत ।।३।।

चउगतिमां भमतां थकां, दुःख अनंतानंत;
भोगवियां एणे जीवड़े, ते जाणे भगवंत ।।४।।

कोई अपूरव पुण्यथी, पाम्यो नर अवतार;
उत्तम कुल उत्पन्न थयो, सामग्री लही सार ।।५।।

जिन वाणी श्रवणे सुणी, प्रणमी ते शुभ भाव;
तिण थी अशुभ टल्यां घणां, कांइक लही प्रस्ताव ।।६।।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिरवां भव दुःख भाखियां, सुख तो सहज समाधि;
तेह उपाधि मिटे हुए, विषय कषाय अगाध ॥७॥
विषय कषाय टल्यां थकी, होय समाधि सार;
तेणे कारण विवरी कहूं, मरण समाधि विचार ॥८॥
मरण समाधि वरणवुं, ते निसुणो भवि सार;
अंत समाधि आदरे, तस लक्षण चित्त धार ॥९॥
जे परिणाम कषाय ना, ते उपशम जब थाय ।
तेह सरुप समाधिनुं, अे छे परम उपाय ॥१०॥
सम्यग् दृष्टि जीवने, तेहनो सहज स्वभाव ।
मरण समाधि वंछे सदा, थिर करी आतम भाव ॥११॥
अरुचि भई असमाधि की, सहज समाधिमुं प्रीत;
दिन दिन तेहनी चाहना, वरते अहिज रीत ॥१२॥
अवसर निकट मरण तणो, जब जाणे मतिवंत ।
तब विशेष साधन भणी, उल्लसित चित्त अत्यंत ॥१४॥
जैसे शार्दूलसिंह कुं, पुरुष कहे कोई जाय ।
सूते क्युं निर्भय हुई, खबर कहुं सुखदाय ॥१५॥
शत्रु की फोजां घणी, आवे छे अति जोर ।
तुम घेरण के कारणे, करती अति घणो शोर ॥१६॥
वचन सुणी ते पुरुष का, उठ्यो शार्दूल सिंह ।
निकस्यो बाहिर तत क्षणे, मानुं अकल अबोह ॥२०॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्द सुणी केसरी तणो, शत्रु को समुदाय ।
हस्ति तुरंगम पायदल, त्रास लहे कंपाय ॥२२॥

• • •

सिंह पराक्रम सहन कुं, समरथ नहीं तिलमात्र ।
जीतण की आशा गई, शिथिल थयां सवि गात्र ॥२४॥
सम्यग् दृष्टि सिंह छे, शत्रु मोहादिक आठ ।
अष्ट कर्म की वर्गणा, ते सेना नो ठाठ ॥२५॥
दुःखदायक ए सर्वदा, मरण समय सुविशेष ।
जोर करे अति जालमी, शुद्धि न रहे लवलेश ॥२६॥
करमों के अनुसार एम, जाणी समकित वंत ।
कायरता दूरे करे, धीरज धरे अति संत ॥२७॥
समकित दृष्टि जीव कुं, सदा सरुप को भास ।
जड पुद्गल परिचय थकी, न्यारो सदा सुख वास ॥२८॥
निश्चय दृष्टि निहालतां, कर्म कलंक ना कोय ।
गुण अनंत को पिंड ए, परमानंदमय होय ॥२९॥
अमूर्तिक चेतन द्रव्य ए, देखे आपकुं आप ।
ज्ञान दशा प्रगट भई, मिट्यो भरम को ताप ॥३०॥
आतम ज्ञान की मगनता, तिनमें होय लयलीन ।
रंजत नहीं पर द्रव्य में, निज गुणमें होय पीन ॥३१॥
विनाशिक पुद्गल दशा, क्षणभंगुर स्वभाव;
मैं अविनाशी अनंत हूं, शुद्ध सदा थिर भाव ॥३२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निज सरुप जाणे इसो , समकित दृष्टि जीव ।
मरण तणो भय नहीं मने, साध्य सदा छे शिव ॥३३॥

मृत्यु समय विचार

थिरता चित्त में लाय के, भावना भावे एम ।
अथिर संसार ए कारमो, इणसुं मुज नहीं प्रेम ॥३५॥
अेह शरीर शिथिल हुआ, शक्ति हुई सब क्षीण ।
मरण नजीक अब जाणीअे, तेणे नहीं होणा दीन ॥३६॥
सावधान सब वातमें, हुई करुं आतम काज;
काल कृतांत कुं जीतके, वेगे लहुं शिवराज ॥३७॥
रणभंभा श्रवणे सुणी, सुभट वीर जे होय ।
ते ततखिण रण में चड़े, शत्रु जीते सोय ॥३८॥

कुटुंब को समझाना

सुणो कुटुंब परिवार सहु, तुमकुं कहुं विचित्र ।
अेह शरीर पुद्गल तणो, केसो भयो चरित्र ॥४०॥
देखत ही उत्पन्न भया, देखत विलय ते होय ।
तिणे कारण ए शरीर का, ममत न करणा कोय ॥४१॥
अेह संसार असारमें, भमतां वार अनंत ।
नव नव भव धारण कर्या, शरीर अनंनानंत ॥४२॥
जन्म मरण दोय साथ छे, छिण छिण मरण ते होय ।
मोह विकल ए जीवने, मालम ना पडे कोय ॥४३॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मैं तो ज्ञान दृष्टि करी, जाणुं सकल सरूप ।
पाडोशी मैं एह का, नहीं मारूं ए रूप ॥४४॥

मैं तो चेतन द्रव्य हूं, चिदानंद मुज रूप ।
अे तो पद्गल पिंड है, भरमजाल अंधकूप ॥४५॥
सडण पडण विद्धंसणो, अेह पुद्गल को धर्म ।
थिति पाके खिण नवि रहे, जाणो एहिज मर्म ॥४६॥

अनंत परमाणु मिली करी, हुआ शरीर पर्याय ।
वरणादिक बहु विध मिल्या, काले विखरी जाय ॥४७॥

पुद्गल मोहित जीव को, अनुपम भासे अेह ।
पण जे तत्त्ववेदी होये, तिनको नहीं कछु नेह ॥४८॥
उपनी वस्तु कारमी, न रहे ते थिर वास,
अेम जाणी उत्तम जना, धरे न पुद्गल आस ॥५९॥
मोह तजो समता भजो जाणो वस्तु स्वरूप,
पुद्गल राग न कीजिये, नवि पडिये भवकूप ॥५०॥
वस्तु स्वभावे नीपजे, काले विणसी जाय ।
करता भोक्ता को नहीं, उपचारे कहेवाय ॥५१॥
तेह कारण एह शरीर सुं, संबंध न माहरे कोय ।
मैं न्यारा एहथी सदा, आ पण न्यारो जोय ॥५२॥
अेह जगत में प्राणिया भरमे भूल्या जेह ।
जाणी काया आपणी, ममत धरे अति तेह ॥५३॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जब थिति एह शरीरकी, काल पोंचे होय क्षीण ।
तब झूरे अति दुख भरे, करे विलाप एम दीन ॥५४॥
हा हा पुत्र तुं क्यां गयो ? मूकी ए सहु साथ ।
हा हा पति तुम क्यां गया ? मुजकुं मूकी अनाथ ॥५५॥

● ● ●

मोह विकल एम जीवडा, अज्ञाने करी अंध ।
ममता वश गणी माहरा, करे क्लेश ना धंध ॥५८॥
इण विध शोक संताप करी, अतिशय क्लेश परिणाम ।
करमबंध बहुविध करे, ना लहे क्षण विशराम ॥५९॥
ज्ञानवंत उत्तम जना, उनका एह विचार ।
जगमें कोई किसी का नहीं, संजोगिक सहु धार ॥६०॥
भमतां भमतां प्राणिया, करे अनेक संबंध ।
रागद्वेष परिणति थकी, बहु विध बांधे बंध ॥६१॥
वेर विरोध बहु विध करे, तिम प्रीत परस्पर होय ।
संबंधे आवी मले, भव भव के बिच सोय ॥६२॥
वनके बिच एक तरु विषे, सध्या समय जब होय ।
दस दिशथी आवी मले, पंखी अनेक ते जोय ॥६३॥
रात्रे तिहां वासो वसे, सवि पंखी समुदाय ।
प्रात: काल उडी चले, दशेदिशे तेहु जाय ॥६४॥
इण विध एह संसार में, सवि कुटुंब परिवार ।
संबंधे सहु आवी मले, थिति पाके रहे न केवार ॥६५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किसका बेटा बाप है? किसका मात ने भ्रात ?
किसका पति? किसकी प्रिया? किसकी न्यात ने जात?६६
किसका मंदिर मालिया? राज्य ऋद्धि परिवार ।
खिण विनासी ए सहु अेम निश्चे चित्त धार ॥६७॥
इन्द्र जाल सम ए सहु, जेसो सुपन को राज ।
जैसी माया भूतकी, तेसो सकल ए साथ ॥६८॥
मोह मदिराना पान थी, विकल हुआ जे जीव ।
तिनकुं अति रमणिक लगे, मगन रहे सदैव ॥६९॥
मिथ्या मतिना जोर थी, नवि समजे चित्तमांय ।
क्रोड जतन करे बापडो, अे रेहवे को नाहीं ॥७०॥
अेम जाणी त्रण लोक में, जे पुद्गल पर्याय ।
तिनकी हुं ममता तजुं, धरूं समता चित्त लाय ॥७१॥
अेह शरीर नहीं माहरूं, अे तो पुद्गल स्कंध ।
मैं तो चेतन द्रव्य हूं, चिदानंद सुख कंद ॥७२॥
अेह शरीर का नाश थी, मुझ को नहीं कुछ खेद ।
मैं तो अविनाशी सदा, अविचल अकल अभेद ॥७३॥
देखो मोह स्वभावथी, प्रत्यक्ष झूठो जेह ।
अति ममता धरी चित्तमां, राखण चाहे तेह ॥७४॥
पण ते राखी नवि रहे, चंचल जेह स्वभाव ।
दुखदाई अे भव विषे, परभव अति दुखदाय ॥७५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐसा स्वभाव जाणी करी, मुझ को नहीं कुछ खेद ।
शरीर अेह असार का, इणविध लहे सहु भेद ॥७६॥
सडो पडो विध्वंस हो, जलो गलो हुओ छार ।
अथवा थिर थई ने रहो, पण मुजको नहीं प्यार॥७७॥
ज्ञान दृष्टि प्रगट हुई, मिट गया मोह अंधार ।
ज्ञान सरूपी आत्मा, चिदानंद सुखकार ॥७८॥
निज सरुप निरधार के, मैं हुआ इसमें लीन ।
काल का भय मुझ चित्त नहीं, क्या कर शके अें दीन:७९।
इसका बल पुद्गल विषे, मुझ पर चले न कांय ।
मै सदा थिर शास्वता, अक्षय आतम राय ॥८०॥
आतम ज्ञान विचारतां, प्रगट्यो सहज स्वभाव ।
अनुभव अमृत कुंडमें, रमण करूं लही दाव ॥८१॥
आतम अनुभव ज्ञानमें, मगन भया अंतरंग ।
विकल्प सब दूरे गया, निर्विकल्प रसरंग ॥८२॥
आतम सत्ता एकता, प्रगट्यो सहज सरूप ।
ते सुख त्रण जगमें नहीं, चिदानंद चिद्रूप ॥८३॥
सहजानंद सहज सुख, मगन रहूं निश दीश ।
पुद्गल परिचय त्याग के, मैं हुआ निज गुण ईश ॥८४॥
देखो महिमा एह को, अद्भुत अगम अनूप ।
तीन लोक की वस्तु का, भासे सकल सरूप ॥८५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञेय वस्तु जाणे सहु, ज्ञान गुणे करी तेह ।
आप रहे निज भाव में, नहीं विकल्प को रेह ॥८६॥
ऐसा आतम रूप में, मैं हुआ इस विध लीन ।
स्वाधीन ए सुख छोडके, वंछु न पर आधीन ॥८७॥
अेम जाणी निज रूप में, रहूं सदा होशियार ।
बाधा पीडा नहीं कछु, आतम अनुभव सार ॥८८॥
ज्ञान रसायण पाय के, मिट गई पुद्गल आश ।
अचल अखंड सुखमें रमुं, पूरणानंद प्रकाश ॥८९ ।
भव उदधि महा भय करू, दुख जल अगम अपार ।
मोहे मूर्छित प्राणीकुं, सुख भासे अति सार ॥९०॥
असंख्य प्रदेशी आतमा, निश्चे लोक प्रमाण ।
व्यवहारे देहमात्र छे, संकोच थकी मन आण ॥९१॥
सुख बीरज ज्ञानादि गुण, सर्वांगे प्रतिपूर ।
जैसे लुन साकर डली, सरवांगे रसभूर ॥९२ ॥
जैसे कंचुक त्यागथी, विणसत नाहीं भुजंग ।
देह त्यागथी जीव पण, तैसे रहत अभंग ॥९३॥
अेम विवेक हृदये धरी, जाणी शाश्वत रूप ।
थिर करी हुओ निज रूपमें, तजी विकल्प भ्रमरूप॥९४॥
सुखमय चेतन पिंड है, सुख में रहे सदैव ।
निर्मलता निजरूप की, निरखे क्षण क्षण जीव ॥९५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निर्मल जेम आकाशकुं, लगे न किणविध रंग ।
भेद छेद हुए नहीं, सदा रहे ते अभंग ॥९६॥
तैसे चेतन द्रव्य में, इन को कबहुं न नाश ।
चेतन ज्ञानानंद मय, जडभावी आकास ॥९७॥
दर्पण निर्मल के विषे, सब वस्तु प्रतिभास ।
तिम निर्मल चेतन के विषे सर्व वस्तु परकास ॥९८॥
इण अवसर यह जानके, मैं हुआ अति सावधान ।
पुद्गल ममता छांडके, धरूं शुद्ध आतम ध्यान ॥९९॥
आतमज्ञान की मगनता, अेहिज साधन मूल ।
अेम जाणो निज रूपमें, करू रमण अनुकूल ॥१००॥
निर्मलता निज रूपकी, किमही कही न जाय ।
तीन लोक का भाव सब, झलके जिनमें आय ॥१०१॥
ऐसा मेरा सहज रूप, जिन वाणी अनुसार ।
आतम ज्ञाने पायके, अनुभव में एकतार ॥१०२॥
आतम अनुभव ज्ञान जे, तेहिज मोक्ष सरूप ।
ते छंडी पुद्गल दशा, कुण ग्रहे भव कूप ॥१०३॥
आतम अनुभव ज्ञान से, दुविधा गई सब दूर ।
तब थिर थई निज रूपकी, महिमा कहुं भरपूर ॥१०४॥
शांत सुधारस कुंड ए, गुण रत्नोंकी खाण ।
अनंत ऋद्धि आवास ए, शिवमंदिर सोपान ॥१०५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परम देव पण एह छे, परम गुरु पण एह ।
परम धर्म प्रकास को, परम तत्त्व गुण एह ॥१०६।
एसो चेतन आपको, गुण अनंत भंडार।
अपनी महिमा बिराजते, सदा सरुप आधार ॥१०७॥
चिद् रूपी चिन्मय सदा, चिदानंद भगवान ।
शिवशंकर स्वयंभू नमु, परम ब्रह्म विज्ञान ॥१०८।
इणविध आप सरुप को, देखो महिमा अति सार ।
मगन हुआ निज रूपमें, सब पुद्गल परिहार ॥१०९॥
उदधि अनंत गुणे भर्यो, ज्ञान तरंग अनेक ।
मर्यादा मूके नहीं, निज सरूप को टेक ॥११०॥
अपनी परिणति आदरी, निर्मल ज्ञान तरंग ।
रमण करूं निज रुपमें, अब नहीं पुद्गल रंग ॥१११॥
पुद्गल पिंड शरीर ए, मैं हूं चेतन राय ।
मैं अविनाशी एह तो, क्षणमें विणसी जाय ॥११२॥
अन्य सभावे परिणमे, विणसंता नहीं वार ।
तिणसुं मुज ममता किसी? पाडोसी व्यवहार ॥११३॥

● ● ●

एह शरीर की ऊपरे, रागद्वेष मुज नाहीं ।
रागद्वेष की परिणते, भमिये चिहुंगति मांही ॥११५॥
रागद्वेष परिणाम से, करम बंध बहु होय ।
परभव दुःखदायक घणा, नरकादिक गति जोय॥११६॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोहे मूर्छित प्राणीकुं, रागद्वेष अति होय ।
अहंकार ममकार पण, तिणथी शुध बुध जाय ॥११७॥
महिमा मोह अज्ञानथी, विकल हुआ सवि जीव ।
पुद्गलिक वस्तु विषे, ममता धरे सदैव ॥११८॥
परमें निजपणुं मानके, निविड ममत चितधार ।
विकल दशा वरते सदा, विकल्प नो नहीं पार ॥११९॥
मैं मेरा ए भाव थी, फिर्यो अनंतो काल ।
जिन वाणी चित्त परिणमें, छूटे मोह जंजाल ॥१२०॥
मोह विकल एह जीवको, पुद्गल मोह अपार ।
पर इतनी समझे नहीं, इसमें कुछ नहीं सार ॥१२१॥
इच्छा थी नवि संपजे, कल्पे विपत ना जाय ।
पर अज्ञानी जीव को, विकल्प अतिशय थाय ॥१२२॥
अेम विकल्प करे घणा, ममता अध अजाण ।
में तो जिन वचने करी, प्रथम थको हुओ जाण ॥१२३॥
मैं शुद्धातम द्रव्य हूं, अे सब पुद्गल भाव ।
सडन पडन विध्वंसणो, इसका एह स्वभाव ॥१२४॥
पुद्गल रचना कारमी, विणसंता नहीं वार ।
अेम जाणी ममता तजो, समता शुं मुज प्यार ॥१२५॥
जननी मोह अंधार की, माया रजनी क्रूर ।
भव दुःखकी ए खाण है, इणसुं रहिये दूर ॥१२६॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अेम जाणी निज रूपमें, रहूं सदा सुख वास ।
अोर सब ए भवजाल है, इससे हुआ उदास ॥१२७॥

किसी का प्रश्न

एह शरीर निमित्त है, मनुष्य गतिके मांह ।
शुद्ध उपयोग की साधना, इससे बने उछाह ॥१२८॥
अेह उपगार चित्त आण के, इनका रक्षण काज ।
उद्यम करना उचित है, अेह शरीर के साज ॥१३०॥

उत्तर

तुमने जो बातें कही, मैं भी जानुं सब ।
अह मनुष्य परजाय सें गुण बहु होत निगवं ॥१३२॥
शुद्ध उपयोग साधन बने, और ज्ञान अभ्यास ।
ज्ञान वैराग्य की वृद्धिको, अेह निमित्त है खास ॥१३३॥
इत्यादिक अनेक गुण, प्राप्ति इणथी होय ।
अन्य परजाये एहवा, गुण बहु दुर्लभ जोय ॥१३४॥
पण अेह विचार में, कहेणे को ए मर्म;
एह शरीर रहो सुखे, जो रहे संजम धर्म ॥१३५॥
अपना संजमादिक गुण, रखणा एहिज सार ।
ते संयुक्त काया रहे, तिनमें को न असार ॥१३६॥
मोकुं एह शरीरसुं, वेर भाव तो नाहीं ।
एम करतां जो नवि रहे, गुण रखणा तो उछाहीं ॥१३७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विधन रहित गुण राखवा, तिण कारण सुण मित्त।
स्नेह शरीर को छांडीए. एह विचार पवित्र ॥१३८॥
एह शरीर के कारणे, जो होये गुण का नाश।
एह कदापि ना कीजिए, तुमकुं कहुं शुभ भाष ॥१३९॥

एक दृष्टांत

कोई विदेशी वणिक सुत, फरतां भूतल मांहा।
रत्न द्वीप आवी चढ्यो, निरखी हरख्यो तांही ॥१४१॥

• • •

तृण काष्टादिक मेलवी, कुटी करी मनोहर।
तिणमें ते वासो करे, करे वणज व्यापार ॥१४३॥
रतन कमावे अति घणां, कुटी में थापे एह।
एम करतां केई दिन गया, एक दिन चिंता अछेह।१४४।
कुटी पास अग्नि लगी, मनमें चिंते एम।
बूझवुं अग्नि उद्यम करी, कुटी रतन रहे जेम॥१४५॥
किणविध अग्नि शमी नहीं, तब ते करे विचार।
गाफिल रहना अब नहीं, तुरत हुआ हुशियार॥१४६॥

• • •

रत्न संभालुं आपणां एम चिंती सवि रत्न।
लेई निजपुर आवियो, करतो बहु विध जत्न ॥१४८॥

• • •

सुख विलसे सब जातका, किसी उणम नहीं तास।
देवलोक परे मानतो, सदा प्रसन्न सुख वास ॥१५०॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भेद विज्ञान पुरुषजो, एह शरीर के काज ।
दूषण कोई सेवे नहीं, अतिचार भी त्याज ॥१५१॥
आत्मगुण रक्षण भणी. दृढता धरे अपार ।
देहादिक मूर्छा तजी, सेवे शुद्ध व्यवहार ॥१५२॥
संजम गुण परभावथी, भावी भाव संजोग ।
महाविदेह खेत्रां विषे, जन्म होवे शुभ जोग ॥१५३॥
जिहां सीमंधर स्वामीजी, आदे वीस जिणद ।
त्रिभुवन नायक सोहता, निरखुं तस मुख चंद ॥१५४॥

एहवा उत्तम क्षेत्रमां, जो होय माहरो वास ।
प्रभु चरणकमल विषे, निश दिन करू निवास ॥१५६॥
निबिड कर्म महारोग जे, तिनकुं फेडणहार ।
परम रसायन जिन गिरा, पान करूं अति प्यार ॥१६०॥
क्षायक समकित शुद्धता, करवानो प्रारंभ ।
प्रभु चरण सुपसायथी, सफल होवे सारंभ ॥१६१॥
एम अनेक प्रकार के, प्रशस्त भाव सुविचार ।
करके चित्त प्रसन्नता, आनंद लहुं अपार । १६२॥
ओर अनेक प्रकार के, प्रश्न करूं प्रभुपाय ।
उत्तर निसुणी तेहना, संशय सवि दूर जाय ॥१६३॥
निसंदेह चित्त होय के, तत्त्वातत्त्व स्वरूप ।
भेद यथार्थ पाय के, प्रगट करूं निज रूप ॥१६४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राग द्वेष दोय दोष ए, अष्ट करम जड एह ।
हेतु एह संसार का, तिनको करवो छेह ॥१६५॥

शीघ्र पणे जड मूलथी, रागद्वेष को नाश ।
करके श्री जिन चंद्रकुं, निरखुं शुद्ध विलास ॥१६६॥

• • •

एहवा प्रभुकुं देखके, रोम रोम उलसंत ।
वचन सुधारस श्रवण ते, हृदय विवेक वधंत ॥१६८॥

• • •

पवित्र थई जिन देव के, पासे लेशुं दीख ।
दुधर तप अंगी करूं, ग्रहण आसेवन शीख ॥१७०॥

चरण धरम प्रभावथी, होशे शुद्ध उपयोग ।
शुद्धातम की रमणता, अद्भुत अनुभव जोग ॥१७१ ।

अनुभव अमृत पान में, आतम भये लयलीन ।
क्षपक श्रेण के सनमुखे, चढ़ण प्रयाण ते कीन ॥१७२॥
आरोहण करी श्रेणी को, धाती करम को नाश ।
घन घाती छेदी करी, केवल ज्ञान प्रकाश ॥१७३॥

• • •

अेहि परमपद जाणीये, सो परमातम रूप ।
शाश्वत पद थिर एह छे, फिरी नहीं भवजल कूप॥१७५

अविचल लक्ष्मी को धणी, अेह शरीर असार ।
तिनको ममता किम करे, ज्ञानवंत निरधार ॥१७६॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्यग् दृष्टि आतमा, श्रेण विध करी विचार ।
थिरता निज स्वभाव में, पर परिणति परिहार ॥१७७॥

जो कदी एह शरीर को, रहेणो कांइक थाय ।
तो निज शुद्ध उपयोग को, आराधन करूं सार ।१७९।
जो कदी थिति पूरण थई, होय शरीर को नाश ।
तो परलोक विषे करूं, शुद्ध उपयोग अभ्यास ॥१८०॥

मेरे परिणाम के विषे, शुद्ध सरूप की चाह ।
अति आसक्त पणे रहे, निश दिन एहिज राह ।।१८२।।

इंद्र धरणेंद्र नरेंद्र का, मुझको भय कुछ नाहीं ।
या विध शुद्ध सरूप में, मगन रहूं चित्त मांही ।१८४।
समरथ एक महाबली, मोह सुभट जग जाण ।
सवि संसारी जीव को, पटके चहुं गति खाण ।।१८५।।
दुष्ट मोह चंडाल की, परिणति विषम विरूप ।
संजमधर मुनि श्रेणीगत, पटके भवजल कूप ।।१८६।।
मोह कर्म महा दुष्टको, प्रथम थकी पहचान ।
जिन वाणी महा मोगरे, अतिशय कीध हेरान ।।१८७।।
जरजरी भूत हुई गया, नाठा मुझ सुं दूर ।
अब नजीक आवे नहीं, दुरपे मुजसुं भूर ।।१८८।।
तेणे करी मैं नंचित हुँ, अब मुज भय नहीं कोई ।
त्रण लोक प्राणी विषे, मित्र भाव मुझ होय ।।१८९।।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवसर लही अब मैं हुआ, निर्भय सर्व प्रकार ।
आतम साधन अब करूं, निसंदेह निरधार ॥१९१॥
शुद्ध उपयोगी पुरुष को, भासे मरण नजीक ।
तब जंजाल सब परिहरी, आप होवे निर्भीक ॥१९२॥

इस विध भाव विचार के, आनंदमय रहे सोय ।
आकुलता किस विध नहीं, निराकुल थिर होय ॥१९३॥

आकुलता भव बीज है, इणथी वधे संसार ।
जाणो आकुलता तजे, अे उत्तम आचार ॥१९४॥

संजम धर्म अंगी करे, किरिया कष्ट अपार ।
तप जप बहु वरसां लगे, करी फल मंच अपार ॥१९५॥
आकुलता परिणाम थी, क्षणमें होय सहु नाश ।
समकित वंत अेम जाणीने, आकुलता तजे खास ॥१९६॥

● ● ●

आकुलता कोई कारणे, करवी नहीं लगार ।
अे संसार दुःख कारणो, इनकुं दूर निवार ॥१९८॥
निश्चे शुद्ध स्वरूप की, चिंतन वारंवार ।
निज सरूप विचारणा, करवी चित्त मझार ॥१९९॥

निज सरूप को देखवो, अवलोकन पण तास ।
शुद्ध सरुप विचारवो, अंतर अनुभव भास ॥२००॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अति थिरता उपयोग को, शुद्ध सरूप के मांही ।
करतां भवदुख सवि टले, निर्मलता लहे तांही॥२०१॥
जेम निर्मल निज चेतना, अमल अखंड अनूप ।
गुण अनंत नो पिंड एह, सहजानंद स्वरूप ॥२०२॥
अेह उपयोगे वरततां, थिर भावे लयलीन ।
निर्विकल्प रस अनुभवे, निज गुणमें होय पीन ॥२०३॥
जब लगे शद्ध सरूप में, वरते थिर उपयोग ।
तब लगे आतम ज्ञानमां, रमण करण को जोग॥२०४॥
जब निज जोग चालत होवे, तब करे अेह विचार ।
अे संसार अनित्य छे, इसमें नहीं कुछ सार । २०५॥
दुख अनंत की खान एह, जनम मरण भय जोर ।
विषम व्याधि पूरित सदा, भव सायर चिहुं ओर॥२०६॥
एह सरूप संसार को, जाणी त्रिभुवन नाथ ।
राज ऋद्धि सब छोड के, चलवे शिवपुर साथ ॥२०७॥
निश्चय दृष्टि निहालतां, चिदानंद चिद् रूप ।
चेतन द्रव्य साधर्मता, पूरणानंद सरूप ॥२०८॥

• •

अथवा पंच परमेष्ठी अे, परम शरण मुझ एह ।
वली जिन वाणी शरण छे, परम अमृत रस मेह ॥२१०॥
ज्ञानादिक आतम गुणा, रत्न त्रयी अभिराम ।
अेह शरण मुझ अति भलुं, जेह थी लहुं शिवधाम।२११।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एम शरण दृढ धार के, थिर करवो परिणाम ।
जब थिरता होये चित्तमां, तब निज रूप विसराम॥२१२॥
आतम रूप निहालतां, करतां चिंतन तास ।
परमानंद पद पामीओ, सकल कर्म होय नाश ॥२१३॥

परम ज्ञान जग एह छे, परम ध्यान पण एह ।
परम ब्रह्म परगट करे, परम ज्योति गुण गेह ॥२१४॥
तिण कारण निज रूप में, फिरि फिरि करी उपयोग ।
चिहुंगति भ्रमण मिटाववा, एह सम नहीं कोई जोग।२१५।
निज सरूप उपयोग थी, फिरि चलत जो थाय ।
तो अरिहंत परमात्मा, सिद्ध प्रभु सुखदाय ॥२१६॥

तिनका आतम सरूप का, अवलोकन करो सार ।
द्रव्य गुण पर्जव तेहना, चिंतवो चित्त मझार॥२१७॥
निर्मल गुण चिंतन करत, निर्मल होय उपयोग ।
तव फिरी निज सरूप का, ध्यान करे थिर जोग ॥२१८॥
जे सरूप अरिहंत को, सिद्ध सरूप वली जेह ।
तेहवो आतम रूप छे, तिणमें नहीं संदेह ॥२१९॥
चेतन द्रव्य साधर्मता, तेणे करी एक सरूप ।
भेदभाव इनमें नहीं, एहवो चेतन भूप ॥२२०॥

धन्य जगत में तेह नर, जे रमे आतम सरूप ।
निज सरूप जेणे नवि लह्यु, ते पडिया भव कूप ॥२२१॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चेतन द्रव्य सभावथी, आतम सिद्ध समान ।
परजाये करी फेरजे, ते सवि कर्म विधान ॥२२२।
तेणे कारण अरिहंत का, द्रव्य गुण परज्ञाय ।
ध्यान करंतां तेहनुं, आतम निर्मल थाय ॥२२३।।
परम गुणी परमातमा, तेहना ध्यान पसाय ।
भेदभाव दूरे टले, अेम कहे त्रिभुवन राय ॥२२४॥
जेह ध्यान अरिहंत को, सोहि आतम ध्यान ।
फेर कछु इणमें नहीं, अेहिज परम निधान ॥२२५॥
अेम विचार हिरदे धरो, सम्यग् दृष्टि जेह ।
सावधान निज़ रूपमें, मगन रहे नित्य तेह ॥२२६॥
आतम हित साधक पुरुष, सम्यग्वत सुजाण ।
कहा विचार मनमें करे, वरणवुं सुणो गुण खाण ।२२७।

• • •

अेह शरीर आश्रित छे, तुम मुज मात ने तात ।
तेणे कारण तुमकुं कहुं, अब निसुणो एक वात ॥२२९॥
अेतो दिन शरीर एह, होत तुम्हारा जेह ।
अब तुम्हारा नाहीं है, भली परे जाणो तेह ।।२३०।।
अब अेह शरीर का, आयुबंल थिति जेह ।
पूरण भई अब नवि रहे, किण विध राखी तेह ।२३१।
थिति परमाणे ते रहे, अधिक न रहे केणी भात ।
तो तस ममता छोडवी, ए समजण की बात ॥२३२।।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो अब अेह शरीर की, ममता करीए भाई ।
थिति राखीए तेहसुं, दुःखदायक बहु थाय ॥२३३॥
सुर असुरों को देह ए, इंद्रादिक को जेह ।
सब हि विनाशिक एह छे, तो क्युं करवो नेह? ॥२३४॥
इंद्रादिक सुर महाबली, अतिशय शक्ति धरंत ।
थिति पूरण थये तेह पण, खिण एक कोउ न रहंत॥२३५॥

• • •

ए हवा पराक्रम का धणो, जब थिति पूरण होय ।
काल पिशाच जब संग्रहे. राखी न शके कोय ॥२३६॥

• • •

तेणे कारण मावित्र तुम, तजो मोहकुं दूर ।
समता भाव अंगी करो, धर्म करो थई शूर ॥२४१॥

• • •

भूठा एह संसार छे, तिणकुं जाणो साच ।
भूल अनादि अज्ञानकी, मोह करावे नाच ॥२४३॥

• • •

स्वप्न सरीखा भोग छे, शुद्धि चपला झबकार ।
डाभ अणी जल बिंदु सम, आयु अथिर संसार ॥२४५॥

• • •

राग दशा से जीवको, निबिड कर्म होय बंध ।
वली दुर्गतिमां जइ पडे, जिहां दुःखना बहु धंध॥२४७॥
मुज ऊपर बहु मोहथी, तुमकुं अति दुःख थाय ।
पण आयु पूरण थये, किसीशुं ते न रखाय ॥२४८॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अल्पकाल आयु तुमे, देखो दृष्टि निहाल ।
संबंध नहीं तुम मुज बिचे, मैं फिरता संसार ॥२४९॥
भावी भाव संबंध थी, मैं भया तुमका पुत्र ।
पंथी मेलाप तणी परे, ये संसारह सूत्र ॥२५०॥
अेह सरूप संसार का, प्रत्यक्ष तुम देखाय ।
ते कारण ममता तजी, धर्म करो चित्त लाय ॥२५२॥
काल आहेजो जगत में, भमतो दिवस ने रात ।
तुमकुं पण ग्रहशे कदा, अे साचो अवदात ॥२५४॥
अेम जाणी संसार की, ममता कीजे दूर ।
समता भाव अंगीकरो, जेम लहो सुख भरपूर ॥२५५॥
धरम धरम जग सहु करे, पण तस न लहे मर्म ।
शुद्ध धर्म समज्या विना, नवि मिटे तस भर्म ॥२५६॥
कटिक मणि निरमल जिसो, चेतन को जे स्वभाव ।
धर्म वस्तुगत तेह छे, अवर सवे परभाव ॥२५७॥
रागद्वेष को परिणति, विषय कषाय संजोग ।
मलिन भया करमे करी, जनम मरण आभोग ॥२५८॥
मोह करम की गेहलता, मिथ्या दृष्टि अंध ।
ममता शुं माचे सदा, न लहे निजगुण संग ॥२५९॥
परम पंच परमेष्ठि को, समरण अति सुखदाय ।
अति आदरथी कीजिये, जेहथी भवदुःख जाय ॥२६१॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अरिहंत सिद्ध परमातमा, शुद्ध सरूपी जेह ।
तेहना ध्यान प्रभाव थी, प्रगटे निज गुण रेह ॥२६२॥
श्रीजिन धर्म पसायथी, हुई मुझ निर्मल बुद्ध ।
आतम भलो परे ओलखी, अब करूं तेहने शुद्ध ॥२६३॥
तुमे पण अेह अंगीकरो, श्री जिनवर को धर्म ।
निज आतमकुं भली परे, जाणी लहो सवि मर्म ॥२६४॥
ओर सवे भ्रमजाल है, दुखदायक सवि साज ।
तिनकी ममता त्याग के, अब साधो निज काज ॥२६५॥
भव भव मेली मूकिया, धन कुटुंब संजोग ।
वार अनंता अनुभव्या, सवि संजोग विजोग ॥२६६॥
अज्ञानी अे आतमा, जिस जिस गतिमें जाय ।
ममता वश तिहां तेहवो, हुई रही बहु दुख पाय ॥२६७॥
महातम अेह सवि मोह को, किणविध कह्यो न जाय ।
अनंत काल अेणी परे भमे, जन्म मरण दुख दाय ॥२६८॥
अेम पुद्गल परजाय जेह, सर्व विनाशी जाण ।
चेतन अविनाशी सदा, अे ना लखे अजाण ॥२६९॥
मिथ्या मोहने वश थई, जूठे को भी साच ।
कहे तिहां अचरज किशो, भव मंडप को नाच ॥२७०॥
जिनको मोह गलो गयो, भेद ज्ञान लही सार ।
पुद्गल की परिणति विषे, नवि राचे निरधार ॥२७१॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिन्न लखे आतम थकी, पुद्गल को परजाय ।
किमहि चलाव्यो नवि चले, कशी परे ते न ठगाय ॥२७२॥
भया यथारथ ज्ञान जब, जाणे निज पर भाव ।
थिरता थई निज रूपमें, नवि रुचे तस पर भाव ॥२७३॥
मुझकुं तुम साथे हतो, एता दिन संबंध ।
अब ते सवि पूरण हुओ, भावी भाव प्रबंध ॥२७५॥
विकल्प कोई तुमे मत करो, धर्म करो थई धीर ।
मैं पण आतम साधना, करूं निज मन कर थिरो ॥२७६॥
सहज स्वरूप जे आपणो, ते छे आपणो पास ।
नहीं किसी सुं जाचना, नहीं पर की किसी आश ॥२७८॥
अपना घरमांही अछे, महा अमूल्य निधान ।
ते संभालो शुभ परे, चिंतन करो सुविधान ॥२७९॥
जनम मरण का दुख टले, जब निरखे निज रूप ।
अनुक्रमे अविचल पद लहे, प्रगटे सिद्ध स्वरूप ॥२८०॥
सकल पदारथ जगत के, जाणण देखण हार ।
प्रत्यक्ष भिन्न शरीरसुं, ज्ञायक चेतन सार ॥२८२॥
दृष्टांत एक सुणो इहां, बारमा स्वर्ग को देव ।
कौतुक मिष मध्य लोकमें, आवी वसियो हेव ॥२८३॥
कोइक रंक पुरुष तणो, शरीर परजायमें सोय ।
पेसी खेल करे किशा, ते देखे सहु कोय ॥२८४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करे मजूरी कोइ दिन, कबहिक मागे भीख ।
कबहिक पर सेवा विषे, दक्ष थई घरे शीख ॥२८६॥

एणि विध खेल करे घणा, पुत्र पुत्री परिवार ।
स्त्री आदि साथे रहे, नगर मांही तेणा वार ॥२८६॥
वैरी कटक आव्युं घणुं, नासण लाग्या लोक ।
तव ते सुर एम चिंतवे, इहां होशे बहु शोक ॥२६०॥
एम विचार करी सवे, चाले आधी रात ।
एक पुत्रकुं कांध पर, बीजाकुं ग्रहे हाथ ॥२६१॥
नगर अमारूं घेरियुं, वयरी लश्कर आय ।
तिण कारण अमे नासिया, लही कुटुंब समवाय ॥२६२॥
एम अनेक प्रकार का, खेल करे जग मांही ।
पण चित्तमें जाणे इस्युं, मैं सदा सुख मांही ॥२६७॥
मैं तो बारमा कल्पको, देव महा ऋद्धिवंत ।
अनोपम सुख विलसूं सदा, अद्भुत ए विरतंत ॥२६८॥
ए चेष्टा जे में करी, ते सवि कौतुक काज ।
रंक परजाय धारण करी, तिणको ए सवि साज ॥२६६॥
जेम सुर एह चरित्रने, नवि धरे ममता भाव ।
दीन भाव पण नवि करे, चिंतवे निज सुर भाव ॥३००॥
एणि विध पर परजाय में, मैं जे चेष्टा करंत ।
पण निज शुद्ध सरूपकुं, कबहुं नहीं विसरंत ॥३०१॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्ध हमारो रूप है, शोभित सिद्ध समान ।
केवल लक्ष्मी को धणी, गुण अनंत निधान ॥३०२॥

पत्नी को समझाना

थिति पूरण भई एह की, अब रहणेका नांही ।
तो क्युं मोह धरो घणो, दुख करना दिल मांही ॥३०५॥
मेरा तेरा संबंध जे, एता दिनका होय ।
वधघट को न करी शके, एणिविध जाणो सोय ॥३०६॥

• • •

तिण कारण तुमकुं कहुं, न धरो इनकी आश ।
गरज सरे नहीं ताहरो, इनका होय अब नाश ॥३०८॥
एम जाणी ममता तजो, धरम करो धरी प्रीत ।
जेम आतम गुण संपजे, अे उत्तम की रीत ॥३०९॥
काल जगत में सहु सिरे, गाफल रहणा नाहीं ।
कबहिक तुमकुं पण गहे, संशय इनमें नाहीं ॥३१०॥

• • •

स्त्री भरतार संयोग जे, भव नाटक एह जाण ।
चेतन तुज मुज सारीखो, कर्म विचित्र वखाण ॥३१२॥

• •

जो मुज ऊपर राग छे, तो करो धरममें सहाय ।
इण अवसर तुज उचित है, अे समो अवर ना काज ।३१४

• •

फोकट खेद ना कीजिये, कर्म बंध बहु थाय ।
जाणी एम ममता तजी, धर्म करो सुखदाय ॥३१६॥

• •

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुनो कुटुंब परिवार सहु, कहुं तुमको हित लाय ।
आउ थिति पूरण भई, एह शरीर की भाय ॥३१८॥
तेणे कारण मुज उपरे, राग न धरणा कोय ।
राग कर्या दुख उपजे, गरज न सरणी जोय ॥३१९॥
एह थिति संसार की, पंखी का मेलाप ।
खिण खिणमें उडी चले, कहा करणा संताप ॥३२०॥
कोण रह्या इहां थिर थई, रेहण हार नहीं कोय ।
प्रत्यक्ष दीसे इणी परे, तुमे पण जाणो सोय ॥३२१॥
मेरे तुम सहु साथशुं, क्षमाभाव छे सार ।
आनंद में तुम सहु रहो, धर्म ऊपर धरो प्यार ॥३२२॥
भव सागरमां डूबतां, ना कोई राखणहार ।
धर्म एक प्रवहण समो, केवलि भाषित सार ॥३२३॥
ए सेवो तुम चित्त धरी, जेम पामो सुख सार ।
दुरगति सवि दूरे टलें, अनुक्रमे भव निस्तार ॥३२४॥

● ● ●

सुणो पुत्र शाणा तुमे, कहने का अे सार ।
मोह न करवो माहरो, अेह अथिर संसार ॥३२६॥
श्रीजिन धरम अंगी करो, सेवो धरी बहु राग ।
तुमशुं सुखदायक घणो, लेशो महा सोभाग ॥३२७॥
व्यावहारिक संबंध थी, आपणा मा नो सार ।
तेणे कारण तुमने कहुं, धारो चित्त मझार ॥३२८॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रथम देव गुरु धर्म को, करो अति गाढ प्रतीत ।
मित्राइ करो सुजनकी, धर्मी शुं धरो प्रीत ।।३२९।।
दान शिथल तप भावना, धर्म ए चार प्रकार ।
राग धरो नित्य एहशुं, करो शक्ति अनुसार ।।३३०।
सज्जन तथा परजन विषे, भेद विज्ञान जेम होय ।
अेह उपाय करो सदा, शिव सुखदायक सोय ।।३३१।।
जे संसारी प्राणिया, मगन रहे संसार ।
प्रीत न कीजिये तेह की, ममता दूर निवार ।।३३२।।
धर्मात्मा पुरुष तणी, संगते बहु गुण थाय ।
जश कीर्ति वाधे घणी, परिणति सुधरे भाय ।।३३४।।
वली उत्तम पुरुष तणी, संगते लहीए धर्म ।
धर्म आराधी अनुक्रमे, पामीअे शिवपुर शर्म ।।३३८।।
दया भाव चित्त लाय के में कह्या धर्म विचार ।
जो तुम हृदयमें धारशो, लेंशो सुख अपार ।।३४१।।
एम सबकुं समझाय के, सबसे अलगा होय ।
अवसर देखी आपणा, चित्तमें चिंते सोय ।।३४२।।
आयु अल्प निज जाण के, समकित दृष्टिवंत ।
दान पुण्य करणा जिके, निज हाथे करे संत ।।३४३।।
बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि जे, तेहथी न्यारा जेह ।
बहु श्रुत आगम अर्थना, मर्म लहे सहु तेह ।।३४५।।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एहवा उत्तम गुरु तणो, पुन्यथी जोग जो होय।
अंतर खुली एकांतमें, निशल्यभाव होय सोय ॥३४६॥
एहवा उत्तम पुरुष को, जोग कदी नवि होय।
तो समकित दृष्टि पुरुष, महा गंभीर ते जोय ॥३४७॥
एहवा उत्तम पुरुष के, आगे अपनी बात।
हृदय खोल के कीजिये, भरम सकल अवदात ॥३४८॥
योग्य जीव उत्तम जिके, भवभीरु महाभाग।
अेहवो जोग न होय कदा, कहेणे को नहीं लाग ॥३४९॥
अपना मनमें चिंतवे, दुष्ट करमवश जेह।
पाप करम जे थई गयुं, बहुविध निंदे तेह ॥३५०॥
श्री अरिहंत परमातमा, बली श्री सिद्ध भगवंत।
ज्ञानवंत मुनिराजनी, बली सुर समकितवंत ॥३५१॥
इत्यादिक महा पुरुष की, साख करी सुविशाल।
बली निज आतम साखसुं, दुरित सवे असराल ।३५२।
मिथ्या दुष्कृत भलो परे, दीजे त्रिकरण शुद्ध।
एणी विध पवित्र थई पछे, कीजे निर्मल बुद्ध ॥३५३
अवश्य मरण निज मन विषे, भासन हुए जाम।
सर्व परिग्रह त्याग के, आहार चार तजे ताम ॥३५४॥
जो कदि निर्णय नवि हुवे, मरण तणो मनमांही।
तो मर्यादा कीजिये, अल्पकाल की तांही ॥३५५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्व आरंभ परिग्रह सहु, तिनको कीजे त्याग ।
चारे आहार वली पचखिये, इणविध करी महाभाग
हवे ते समकित दृष्टिवंत, थिर करी मन वच काय ।
खाटथी नीचे उतरो, सावधान अति थाय ॥३५७॥
सिंह परे निर्भय थई, करे निज आतम काज ।
मोक्ष लक्ष्मी वरवा भणी, लेवा शिवपुर राज ॥३५८॥
इणविध समकितवंत जे, करी थिरता परिणाम ।
आकुलता अंशे नहीं, धीरज तणुं ते धाम ॥३६०॥
शुद्ध उपयोगमां वरततो, आतम गुण अनुराग ।
परमातम के ध्यान में, लीन और सब त्याग ॥३६१॥
ध्याता ध्येयनो एकता, ध्यान करता होय ।
आतम होय परमातमा, एम जाणे ते सोय ॥३६२॥
सम्यग् दृष्टि शुभ मति, शिव सुख चाहे तेह ।
रागादि परिणाम में, क्षण नवि वरते तेह ॥३६३॥
किणहि पदारथ की नहीं, वांछा तस चित्त मांह ।
मोक्ष लक्ष्मी वरवा भणी, धरतो अति उछांह ॥३६४॥
अणविध भाव विचारतां, काल पूरण करे सोय ।
आकुलता किणविध नहीं, निराकुल थिर होय ॥३६५॥
आतम सुख आनंदमय, शांत सुधारस कुंड ।
तामें ते झीली रहे, आतम विरज उदंड ॥३६६॥
आतम सुख स्वाधीन छे, और न एह समान ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एम जाणी निज रूपमें, वरते धरी बहुमान ॥३६७॥
एम आनंदमां वरततां, शांत परिणाम संयुक्त ।
आयु निज पूरण करी, मरण लहे मतिमंत ॥३६८॥
एह समाधि प्रभावथी, इन्द्रादिक की ऋद्धि ।
उत्तम पदवी ते लहे, सर्व कारज को सिद्ध ॥३६९॥
सुर लोके शाश्वत प्रभु, नित्य भक्ति करे तास ।
कल्याणक जिनराजनां, ओछव करत उल्लास ॥३७१॥
मनुष्य गति उत्तम कुले, जनम लहे भवि तेह ।
संजम धर्म अंगीकरी, गुरु सेवे धरी नेह ॥३७४॥
शुद्ध चरण परिणामथी, अति विशुद्धता थाय ।
क्षपक श्रेणी आरोही ने, घाती करम खपाय ॥३७५॥
केवल ज्ञान प्रगट भयो, केवल दर्शन भास ।
एक समय त्रण कालको, सर्व वस्तु परकास ॥३७६॥
सादि अनंत थिति करी, अविचल सुख निरधार ।
वचन अगोचर अेह छे, किणविध लहीए पार? ॥३७७॥
महिमा मरण समाधिनो, जाणो अति गुणगेह ।
तिण कारण भवि प्राणिया, उद्यम करीअे तेह ॥३७८॥
अल्प मति अनुसारथी, बिन उपयोगे जेह ।
विरुद्ध भाव लखियो जिके, मिथ्या दुष्कृत तेह ॥३८२॥
भावनगर वासी भला, सेवक श्री भगवंत ।
भगवान सुत भगवानकुं, बहेचरदास प्रणमत ॥३८३॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

: नव पदों के दोहे :

[यहाँ दिये ये दोहे श्री सिद्धचक्र की आराधना के लिए प्रतिदिन बोले जाते हैं। यहाँ विचारने के लिए उनका अर्थ दिया जाता है। श्रीपालजी के रास में कवि ने ये गाये है। इनमें कथित प्रकार से ध्यान करने से आत्म ऋद्धि की प्राप्ति सरल है।]

अरिहंत पद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जायरे।
भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थायरे।।१।

वीर जिनेश्वर उपदिशे, सांभलजो चित्त लाईरे।
आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मले सवि आईरे।।

द्रव्य गुण और पर्याय सहित अरिहंत पदका ध्यान करने से आत्मा भेद को तोडकर स्वयं अरिहंत रूपी बन जाता है।।

प्रभु महावीर के इस उपदेश को मन में सोचो, सुनो कि आत्मा के ध्यान से सर्व ऋद्धि (विशेषत: आत्म ऋद्धि) प्राप्त होती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूपातीत स्वभाव जे, केवल दंसण नाणीरे ।
ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्धगुण खाणीरे॥वीर०।

केवल दर्शन व केवल ज्ञान सहित, रूपसे रहित (अरूपी) सिद्ध भगवानका ध्यान करने से अपनी आत्मा भी सिद्ध के गुणों की खान हो जाती है ।

अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचेरे ।
साधु सूधाते आतमा, शुं मुंडे शुं लोचेरे ।।वीर०॥

हर्ष और शोक रहित (दोनों मिट जाने से वीतराग सा) हमेशा अप्रमत्त रहने वाला आत्मा स्वयं शुद्ध साधु है। फ़िर वह क्या मुंडन करे व क्या लोच करे?

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुख्य आंतरिक भाव

[यहां दी गई गाथाएं संथारा पोरिसी सूत्रमें से ली हैं। श्रावक के लिए पौषधमें तथा साधु के लिए सदैव यह बोली जाती हैं। यही हमारी अंतिम इच्छा, आराधना हो, यही समाधि मरण है।

इसमें दिये गये विचार रोज सोचें और मनमें उतारें तो अंतिम समय यह भावना साकार हो सकेगी–समाधि मरण प्राप्त होगा।
इसमें बताई भावना हमेशा दिलमें बनी रहे।]

एगोहं नत्थि मे कोई, नाहमन्नस कस्सई।
एवं अदीण मणसो, अप्पाणमणुसासई ॥१॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसण संजुओ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा॥२॥

'मैं अकेला हूं, मेरा कोई नहीं है, मैं भी किसीका नहीं हूं।' दीनता रहित मनसे ऐसा सोचता हुआ अपनी आत्मा को समझावे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञान दर्शन सहित मेरी आत्मा अकेली है और शाश्वत है। अन्य सब सिर्फ संयोग से उत्पन्न बाह्य भाव हैं (अतः त्याज्य है)।

संजोग मूला जीवेण, पत्ता दुक्ख परंपरा।
तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिआ॥३॥

इन संयोगों के कारण से ही यह जीव दुःखकी परंपरा को प्राप्त हुआ है। इसलिए इन सर्व संयोगों की तथा संयोग जनित संबधों को मन वचन काया से वोसिराता हूं, छोडता हूं-भूल जाता हूं॥३॥

सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह राज भमंत।
ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झवि तेह खमंत॥४॥

सर्व जीव कर्मवश होनेसे चौदह राजलोक में भटक रहे हैं। उन सब से मैं क्षमा चाहता हूं, वे भी मुझे क्षमा करें॥४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मैत्र्यादि चार भावना

परहितचिंता मैत्री, परदुःख विनाशिनी तथा करुणा।
परसुखतुष्टिर्मुदिता, परदोषोपेक्षणमुपेक्षा । षोडशके

अन्य जीवों के हित-कल्याणकी भावना हृदयसे रखना मैत्रीभाव है। अन्य जीवों के दुःख का अन्त हो, ऐसा दिलका भाव ही करुणा है । अन्य जीवों की सुख समृद्धि अथवा गुण गौरव देखकर दिलका खुश होना मुदिता (प्रमोद) तथा अन्य जीवों के अत्यंत कठोर व क्रूर भाव व दोष देखकर उनकी रागद्वेष रहित उदासीन भाव रखना उपेक्षा है।

मैत्री भावनुं पवित्र झरणुं मुझ हैयामां वह्या करे
शुभ थाओ आ सकल विश्वनुं एवी भावना नित्य रहे ।
गुणथी भरेला गुणीजन देखी हैयुं मारुं नृत्य करे ।
अे संतोना चरणकमलमां मुझ जीवननुं अर्घ्य रहे ।
दीन क्षीण ने धर्म विहोणा देखी दिलमां दर्द रहे।
करुणा भीनी आंखोमांथी अश्रुनो शुभ श्रोत वहे ।
मार्ग भूलेला जीवन पथिकने मार्ग चींधवा उभो रहूँ।
करे उपेक्षा ए मारगनी तोए समता चित्त धरु।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिवमस्तु

शिवमस्तु सर्वं जगतः
परहित निरता भवन्तु भूत गणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं
सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ।

सारे जगत का कल्याण हो, सभी जीव अन्य जीवों के हितकर कार्यमें रत रहें । दोषों (सभी जीवों के सभी दोष) का नाश हो और सर्वत्र सर्व जीव सुखी हों ।

सर्व जीवों के कल्याण की इच्छा एक भारी गुण है । अतः इस इच्छा के साथ त्रिसंध्य १२-१२ नवकार गिनें ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अरिहंता मे सरणं

सिद्धा मे सरणं

साहू मे सरणं

केवलिपन्नत्तो धम्मो मे सरणं.

गरिहामि सव्वाइं दुक्कडाइं

अणुमोएमि सव्वेसिं सुकडाइं

For Private And Personal Use Only